चन्दामामा
दीपावली विशेषांक
75
NAYE
PAISE

Photo by Brahm Dev

पुरस्कृत परिचयोक्ति

दिल्लगी नाक से !

प्रेषिका
मंजुकुमारी - पटना

# चन्दामामा

नवम्बर १९५९

विषय - सूची

आधुनिक यन्त्र
और कुशल
कार्य-कर्ताओं से
सुसज्जित,
सुव्यवस्थित
बृहत संस्था
PRASAD
PROCESS

# फिर से आश्चर्यजनक स्वास्थ्यका अनुभव कीजिये !

**वॉटरबरीज़ कम्पाउंड** अेक प्रमाणित बलवर्धक औषध है जिसका उपयोग दुनिया भर में स्वास्थ्य का ख्याल रखनेवाले, अपने और अपने परिवार के लिये, करते हैं।

**वॉटरबरीज़ कम्पाउंड** में जीवनोपयोगी पौष्टिक तत्व हैं जो आपको और अपने परिवार को वह अतिरिक्त शक्ति प्रदान करते हैं जो प्रबल, स्वस्थ व आनन्दपूर्ण जीवन के लिये जरूरी है।

**वॉटरबरीज़ कम्पाउंड** निरन्तर खांसी, सर्दी और फेफड़े की सूजन आदिका खंडन करता है। बीमारी के बाद शीघ्र स्वास्थ्य लाभ के लिये डाक्टर इसकी सिफारिश करते हैं।

पिलफर-प्रुफ ढक्कन और लाल लेबल के साथ उपलब्ध है।

लाल रंग का रॅपर अब बंद कर दिया है।

तन्दुरुस्त बने रहने के लिये

# वॉटरबरीज़ कम्पाउंड

लीजिये

# अमृतांजन

**दर्द बढ़ने से पहले ही उसे दूर कर देता है**

अमृतांजन केवल दर्द ही दूर नहीं करता बल्कि उसके मूल कारण को भी नष्ट कर देता है। इससे जकड़न दूर होती है और खून को स्वाभाविक रूप से बहने में मदद मिलती है।

अमृतांजन इतना ज़रा-सा लगाना होता है कि इसकी एक शीशी महीनों चलती है।

अमृतांजन लिमिटेड, मद्रास ४ तथा: बम्बई १, कलकत्ता १ और नयी दिल्ली

## सूचना

एजेण्टों और ग्राहकों से निवेदन है कि मनीआर्डर कूपनों पर पैसे भेजने का उद्देश्य तथा आवश्यक अंकों की संख्या और भाषा संबंधी आदेश अवश्य दें। पता – डाकखाना, ज़िला, आदि साफ़ साफ़ लिखें। ऐसा करने से आप की प्रतियाँ मार्ग में खोने से बचेंगी। —सर्क्युलेशन मैनेजर

*

## ग्राहकों को एक जरूरी सूचना!

ग्राहकों को पत्र-व्यवहार में अपनी ग्राहक-संख्या का उल्लेख अवश्य करना चाहिये। जिन पत्रों में ग्राहक-संख्या का उल्लेख न होगा, उन पर कोई ध्यान नहीं दिया जा सकेगा। पता बदल जाने पर तुरन्त नए पते की सूचना देनी चाहिए। यदि प्रति न मिले तो १० वीं तारीख से पहले ही सूचित कर देना चाहिए। बाद में आनेवाली शिकायतों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाएगा।

व्यवस्थापक, “चन्दामामा”

मनोहर गन्धवाली!

Remy

Remy

रेमी सौन्दर्य सामग्री

Aykar

# चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

एक और वर्ष समाप्त हो गया। फिर दीपावली आ गई है—हर्ष का उत्सव। लक्ष्मी का पर्व।

हर वर्ष की तरह "चन्दामामा" भी एक विशेषांक समर्पित करके यह उत्सव मना रहा है। यह अंक, हमें आशा है, इस पर्व दिन पर आपकी प्रफुल्लता में वृद्धि करेगा।

दीपावली के दिन लक्ष्मी की पूजा की जाती है और लक्ष्मी प्रायः मणि-माणिक्यों में बसती आई है। अतः हमने इस अंक में इन पर एक विस्तृत लेख दिया है। इसमें बहुत-सी जानकारी संक्षेप में दी गई है।

इस शुभ अवसर पर हम अपने पाठकों व हित चिन्तकों का अभिवादन करते हैं।

वर्ष: ११ | नवम्बर १९५९ | अंक: ३

युधिष्ठिर को आता देख कौरव सेना में कई ने हाहाकार किया। कई चुप रहे। कई और ने कहा—"देखा! युधिष्ठिर डर गया है। अपने प्राण और अपने भाइयों के प्राणों की रक्षा करने के लिए भीष्म से प्रार्थना करने आया है। जिसके ऐसे भाई हों और वह ऐसा डरता हो ऐसा क्षत्रिय कहीं देखा है! जब आखिर मैदान में उतरे तो पैर ढीले पड़ गये।" उन में से कई ने यहाँ तक कि छी छी करके दुत्कारा भी।

इतने में युधिष्ठिर ने अपने भाइयों के साथ कौरव सेना में प्रवेश किया। भीष्म के पास जाकर उनके पैरों पर पड़कर कहा—"दादा, हमें तुम से, जिसे कोई भी जीत नहीं पाया है, युद्ध करना पड़ रहा है। इसके लिए अपनी अनुमति दो। हमें अपना आशीर्वाद दो।"

यह सुन भीष्म ने कहा—"बेटा, तुम्हें इस तरह आकर मेरे आशीर्वाद माँगते देख मुझे बहुत सन्तोष हो रहा है। क्योंकि मैंने कौरवों का नमक खाया है, इसलिए मुझे उनकी तरफ से लड़ना पड़ रहा है। तुम युद्ध करो, विजय तुम्हारी होगी। अगर तुम मुझ से कोई वर चाहते हो, तो माँगो।"

"दादा, हमेशा हमारे भले की सोचना। हमें हमेशा उचित परामर्श देते रहना। मुझे तुम्हारे युद्ध करने पर कोई आपत्ति नहीं है।" युधिष्ठिर ने कहा।

"बेटा, किस बात पर मेरी सलाह चाहते हो?" भीष्म ने पूछा।

"दादा, तुम तो किसी से पराजित किये नहीं जा सकते। तुमको पराजित करने के लिए हमें क्या करना होगा?" युधिष्ठिर ने पूछा।

"युधिष्ठिर, मुझे नहीं मालूम युद्ध में मुझे कौन मार सकता है! फिर कभी मिलेंगे।" भीष्म ने कहा।

युधिष्ठिर, भीष्म को नमस्कार करके, उनसे विदा लेकर भाइयों के साथ द्रोण के पास गया। उनको नमस्कार करके उसने कहा—"आचार्य! गुरु की अनुमति के बिना युद्ध करना अनुचित होगा। अतः मुझे अनुमति दीजिये।"

द्रोण ने भी भीष्म की तरह युद्ध करने के लिए कहा और आशीर्वाद दिया कि उसकी विजय हो।

"युद्ध में सहायता के अतिरिक्त चाहे कुछ भी माँगो, देने के लिए तैयार हूँ।" द्रोण ने कहा। युधिष्ठिर ने विजय के लिए आशीर्वाद माँगा। द्रोण ने आशीर्वाद दिया। फिर युधिष्ठिर ने द्रोण से पूछा—"कोई ऐसा उपाय बताइये, जिससे आपको पराजित किया जा सके।"

"जब तक मैं शस्त्रों से सन्नद्ध रहूँगा, तब तक मुझे कोई नहीं हरा सकता। मुझे
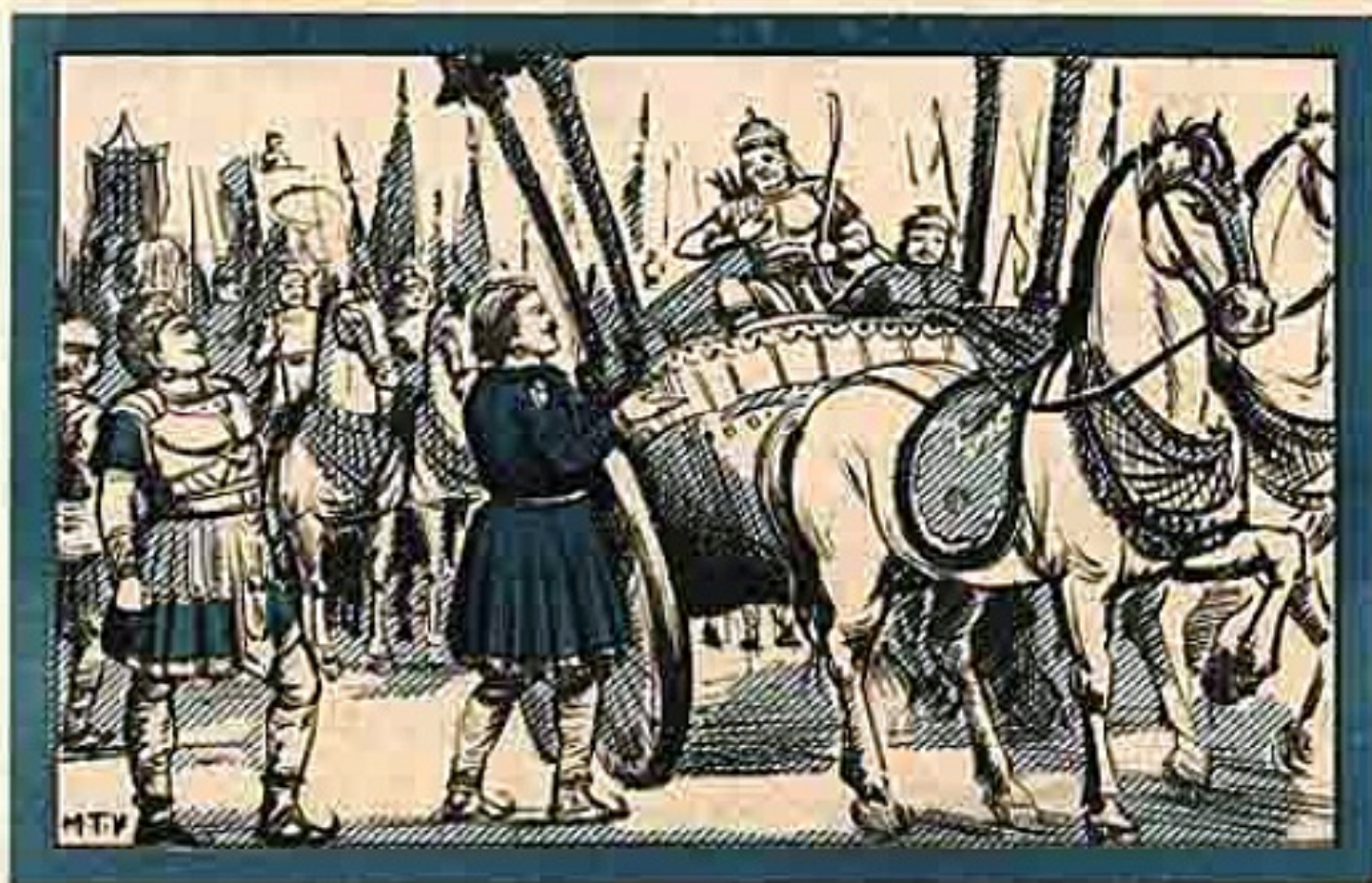
तभी मारा जा सकता है, जब मैं उन्हें छोड़ दूँगा। युद्ध में यदि मुझे कोई दुःख समाचार मिला तो मैं अस्त्र शस्त्र छोड़ दूँगा। किसी और परिस्थिति में मैं शस्त्र नहीं छोड़ूँगा।" द्रोण ने कहा।

फिर युधिष्ठिर कृपा और शल्य के पास गया। उनको नमस्कार किया। युद्ध के लिए उनकी भी अनुमति माँगी। उनसे भी आशीर्वाद माँगा कि युद्ध में उसकी विजय हो। अपने मामा शल्य से कहा—"मामा, कर्ण को मारने के लिए हमें तुम्हारी सहायता की आवश्यकता होगी।" शल्य ने सहायता करने का वचन दिया।

इस बीच, कृष्ण ने कर्ण के पास जाकर कहा—"कर्ण, सुना है कि तुमने प्रतिज्ञा की है कि जब तक भीष्म जीवित रहेगा तब तक तुम युद्ध न करोगे। तब तक पाण्डवों की तरफ से क्यों नहीं युद्ध करते? बाद में कौरवों में जा मिलना।"

यह सुन कर्ण ने कृष्ण से कहा—"कृष्ण, मैं दुर्योधन के लिए प्राण त्याग करने के लिए उद्यत हूँ। तेरा कहना मानकर, तुम सोचते हो, मैं उसका अपकार करूँगा?"

जिन जिन को नमस्कार करना था, उनको नमस्कार करके, जिन जिन का आशीर्वाद लेना था, उनका आशीर्वाद लेकर, वापस आते हुए दोनों सेनाओं के बीच में युधिष्ठिर रुका। पीछे मुड़कर उसने कौरव पक्ष के योद्धाओं से कहा—"सैनिको! यदि आप में से कोई हमारी तरफ से लड़ना चाहता है, तो मैं उसको हमारे साथ आने के लिए सहर्ष निमन्त्रित करता हूँ।

कौरव सेना में सम्मिलित युयुत्सु ने युधिष्ठिर से कहा—"राजन्! अगर आप

चाहते हैं, तो मैं आपकी तरफ आकर कौरवों से लड़ूँगा।" यह युयुत्सु भी धृतराष्ट्र के लड़कों में से एक था। इसकी माँ एक वैश्य स्त्री थी।

युधिष्ठिर ने आदर पूर्वक कहा—"आओ, युयुत्सु! तुम्हारे मूर्ख भाइयों के साथ हम सब मिलकर लड़ें। दुर्योधन आदि को पितरों का श्राद्ध करने का अधिकार नहीं है। कम से कम तुम करना।"

तुरत युयुत्सु पाण्डवों की तरफ आ गया। धर्मराज ने अपने रथ के पास पहुँचकर कवच धारण किया। सर्व सेनापति धृष्टद्युम्न ने एक बार देखा कि सब पाण्डव अपने अपने रथों में युद्ध के लिए सन्नद्ध हैं कि नहीं। फिर दोनों पक्षों से शंख और भेरी का तुमुल घोष हुआ।

युद्ध आरम्भ हो गया। महा भयंकर महाभारत युद्ध में पहिला आक्रमण भीम ने किया और अन्त का आक्रमण भी। पाण्डव सेना के सब से आगे भीम खड़ा था, वह मेघ की तरह गरजा, और विद्युत की तरह कौरव सेना पर टूट पड़ा। दुर्योधन, दुश्शासन, आदि उसका सामना करने गये। पाण्डवों की तरफ से उपपाण्डव, अभिमन्यु,
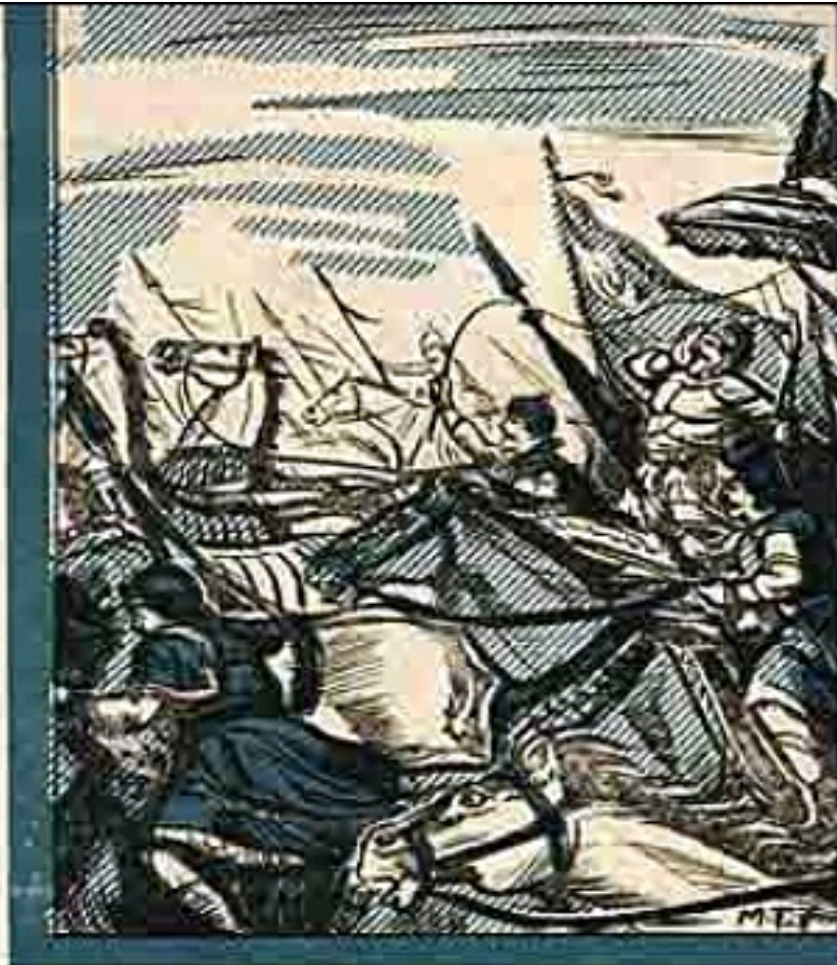
नकुल, सहदेव, धृष्टद्युम्न आदि, दुश्शासन आदि के मुकाबले में अपनी बाण विद्या प्रदर्शित करने लगे। तुरत दोनों तरफ के योद्धा एक दूसरे से लड़ने लगे। मर कटने लगे।

एक तरफ से भीष्म और दूसरी तरफ से अर्जुन, शत्रु-सेनाओं का संहार करते एक दूसरे के सामने आये। उन दोनों में भयंकर युद्ध होने लगा।

इस तरह सारी सेना में द्वन्द्व-युद्ध हो रहा था। कृतवर्मा से सात्यकी, कोशल के राजा बृहद्वीप से अभिमन्यु, दुर्योधन से भीम

दुश्शासन से नकुल, दुर्मुख से सहदेव, शल्य से युधिष्ठिर, द्रोण से धृष्टद्युम्न, अलम्बस से घटोत्कच, अश्वत्थामा से शिखंडी, सैन्धव से द्रुमद, विकर्ण से भीम का पुत्र, शत्रु सोम, शकुनि से युधिष्ठिर का लड़का इस तरह कई द्वन्द्व-युद्ध एक साथ एक ही मैदान में हो रहे थे। इन युद्धों में कोई भी योद्धा नहीं मारा गया। परन्तु कितनी ही पताकायें टूट गईं, कितने ही रथ टूट गये। कितने ही घोड़े मारे गये। सारथी मारे गये। कितने ही योद्धा घायल हुए।

इन द्वन्द्व युद्धों के साथ साधारण युद्ध भी चला। इस युद्ध में असंख्य सैनिक, घोड़े, हाथी मारे गये।

दुपहर होने को थी कि भीष्म ने यम की तरह पाण्डव सेना पर आक्रमण किया। उसकी रक्षा के लिए दुर्योधन ने दुर्मुख, कृतवर्मा, कृपा और शल्य आदि को नियुक्त किया। पाण्डव सेना का संहार करते भीष्म को देखकर अभिमन्यु उसका सामना करने गया। उसके रथ पर कर्णिकार वृक्ष के निशानवाला झंडा फहरा रहा था।

अभिमन्यु ने भीष्म के सामने आते ही उन पर और उनके साथियों पर शर परम्परा का प्रयोग किया। भीष्म के शरीर में नौ बाण घुस गये। कृपा के हाथ का बाण टूट कर गिर गया। दुर्योधन का झंडा उखड़ गया। एक और चोट से उसके हाथी का सिर कट गया। अभिमन्यु को इस प्रकार युद्ध करता देख सबको सहसा अर्जुन स्मरण हो आया। भीष्म ने अभिमन्यु को पीछे हटाने का बहुत प्रयत्न किया। परन्तु अभिमन्यु उसके प्रति बाण को काटता गया। आखिर उसने उसके ताड़ के पेड़ के झंडे को ही तोड़ दिया। यह देख भीम ने आनन्दित हो सिंहनाद किया।

इतने में विराट, उसके लड़के सात्यकी धृष्टद्युम्न आदि आकर कौरवों का मुकाबला करने लगे। इस लड़ाई में उत्तर, शल्य पर लपका। तब वह एक हाथी पर सवार था। वह हाथी, शल्य के रथ की ओर झपटा। उसके रथ के चारों घोड़ों को मार दिया। शल्य ने रथ से बिना उतरे ही, बहुत भयंकर शक्ति का उत्तर पर प्रयोग किया। शक्ति उत्तर के कवच के अन्दर गई और वह तुरत बेहोश हो गया।

उत्तर के हाथ से अंकुश गिर गया, वह हाथी पर से गिर गया। इस बीच शल्य, कृतवर्मा के रथ पर चढ़ गया।

शल्य से जब उसका भाई घायल कर दिया गया, तो विराट के एक और लड़के श्वेत ने कोपावेश में, अकेले सात कौरव योद्धाओं पर चढ़ाई कर दी। वह शत्रुओं से खूब लड़ा। उसने उनके बाण तोड़ दिये। उन्होंने जो सात शक्तियाँ उस पर छोड़ीं, उन सबको उसने अपने बाणों द्वारा काट दिया। शकुनि के लड़के, रुक्म रथ को उसने एक बाण से बेहोश कर दिया और शल्य के रथ पर शेर की तरह चढ़ गया। उस दिन शल्य मारा जाता यदि समय पर दुर्योधन, भीष्म आदियों के साथ आकर उसकी मदद न करता। शल्य प्राण बचाकर पीछे चला गया।

श्वेत का कोप इतने से शान्त न हुआ। वह उन्मत्त की तरह लड़ता रहा। कौरव सेना को, सैकड़ों, सहस्रों की संख्या में मारने लगा। वे उसके आक्रमण को न रोक सके। कौरव योद्धाओं ने जाकर भीष्म से कहा—"वीरशिरोमणि, हममें श्वेत का मुकाबला करने का साहस नहीं है।"

यह सुन भीष्म, श्वेत की ओर गया और पाण्डव सेना का संहार करने लगा।

आखिर, भीष्म और श्वेत आमने सामने आये। उन दोनों में घोर महायुद्ध हुआ। यदि उस समय श्वेत सामने न आता तो न मालूम कितनी पाण्डव सेना मारी जाती। दोनों ने एक दूसरे पर बाण पर बाण छोड़े। आखिर भीष्म थक कर पीछे हटा। पाण्डवों के आनन्द की और कौरवों के शोक की सीमा न रही।

?
ha!
hee hee hee

# अक़्लमन्द स्त्री

एक गांव में एक किसान था। उसके एक ही लड़का था। किसान का ख्याल था कि बड़ा होने पर उसका लड़का बड़ा अक़्लमन्द बनेगा। लड़का भी यही सोचता कि हर रोज वह अधिक बुद्धिमान होता जा रहा था। पर पिता यह न सोचता था।

एक दिन किसान ने अपने लड़के से कहा—"तुम्हारी उम्र बीस साल की हो गई है पर खास कामकाजी नहीं बने, तुम में तो अक़्ल ही नज़र नहीं आती।"

"अगर अक़्ल मुझमें नहीं है, तो किसमें है? मुझे क्या करने के लिए कहते हो? बताओ।" लड़के ने पूछा।

"हमारे घर में भेड़ की खाल है, उसे कल पेंठ में बेच आना, ज़रा तुम्हारी अक़्ल तो देखें।" किसान ने कहा।

"पल भर में खाल बेचकर पैसा जो मैं ला दूँगा?" लड़के ने कहा।

"अरे पगले! खाल बेचकर पैसे लाने में क्या होशियारी है? वह तो कोई भी कर सकता है। अगर सचमुच तुम अक़्लमन्द हो तो खाल भी लाओ और उसके दाम भी। समझे?" पिता ने कहा।

लड़के ने कहा—"अच्छा। कल शाम तक भेड़ की खाल लाऊँगा और साथ उसके दाम भी।"

अगले दिन सवेरे भेड़ की खाल लेकर वह पेंठ गया। वह पेंठ में घुसा ही था कि किसी ने पूछा—"क्या यह खाल बेचोगे? कितना लोगे?" "चाहे कितने में ही दूँ, पर मुझे खाल चाहिए और उसके दाम भी।" किसान के लड़के ने कहा।

रूपनारायणलाल

खाल खरीदनेवाले ने ठहाका मारकर कहा—"वाह! वाह!! क्या सूझ है! खैर, किसी से पूछकर देखो कि कोई बिना खाल लिये इसके दाम देता है कि नहीं।" वह यह कह चला गया।

पैंठ में कई ने किसान के लड़के से खाल का दाम पूछा। सबसे उसने यही कहा। सब उसे देखकर हँसे और खाल खरीदे बिना ही चले गये।

दुपहर ढल गई। शाम होने जा रही थी। खाल न बिकी। घूमते-घूमते उसके पैर टूट से गये थे। वह एक ऐसी जगह पहुँचा, जहाँ भीड़ थी। उस भीड़ के बीच में कोई जादूगर जादू दिखा रहा था। किसान के लड़के को देखते ही उसने कहा—"भाई, जरा वह खाल देना, तुम्हें अच्छा जादू दिखाऊँगा।"

किसान के लड़के ने खाल दे दी। जादूगर ने खाल को जमीन पर रखा, उस पर अपना अंगोछा डाल दिया। फिर उसने सबको तालियाँ पीटने के लिए कहा। उसने अपना अंगोछा उठाया। उसके नीचे एक आम का पौधा था, उस पर एक आम भी था।

किसान के लड़के को बड़ा आश्चर्य हुआ। जब उसने अपनी भेड़ की खाल माँगने की सोची तो वह जादूगर कहीं गायब हो गया था। भीड़ भी इधर उधर चली गई थी।

किसान के लड़के को रोना-सा आ गया। उसने पिता को वचन दे रखा था कि वह खाल और उसके दाम, दोनों लाकर देगा। यहाँ दाम तो खैर मिला ही नहीं, खाल भी कोई लेकर चम्पत हो गया। अगर खाली हाथ गया तो यह सिद्ध हो जायेगा कि मैं निरा मूर्ख हूँ। उसको बड़ी भूख भी लग रही थी। सामने के आम के पौधे पर आम दिखाई दे रहा था। उसे खाकर उसने अपनी भूख मिटानी चाही। उसने जो उसे पकड़ा तो आम अदृश्य हो गया और भेड़ की खाल दिखाई दी।

यही काफी है, यह सोचकर, वह भेड़ की खाल लपेट कर, बगल में रखकर घर की ओर चल पड़ा। सूर्यास्त होनेवाला था। थोड़ी दूर जाने के बाद उसे ऐसा लगा, जैसे कोई पीछे से बुला रहा हो। पीछे मुड़ने पर देखा तो वह वही जादूगर था।

जादूगर किसान के साथ आ मिला। उसके साथ-साथ चलते हुए उसने कहा—"तुम बहुत बुद्धिमान हो, तुम्हे एक सलाह देता हूँ, उसे कभी न भूलना।"

"क्या है वह सलाह?" किसान के लड़के ने पूछा।

"अगर रास्ते में कोई स्त्री दिखाई दे, तो उससे स्नेहपूर्वक कुशल प्रश्न पूछना।" जादूगर ने कहा।

थोड़ी दूर जान के बाद रास्ता फटा, जादूगर दूसरे रास्ते से चला गया। किसान का लड़का अपने गाँव की ओर चलता गया। अन्धेरा हो रहा था कि उसको एक नाला दिखाई दिया। उस नाले से थोड़ी दूर पर एक घर था। उस घर में से सोलह वर्ष की लड़की आकर नाले से घड़े में पानी भर रही थी।

किसान के लड़के को जादूगर की सलाह याद आई—"क्यों! क्या हालचाल है!" उसने उस लड़की से पूछा।

"आप सब ठीक हैं न!" उस लड़की ने पूछा।

बातचीत के सिलसिले में वह लड़की जान गई कि किसान के लड़के ने

सवेरे से कुछ न खाया था। वह उसे अपने घर ले गई। उसे जौ की रोटी खिलाई। फिर उसने भेड़ की खाल के बारे में पूछा।

"इसे बेचकर, इसे और इसके दाम पिता ने घर लाने के लिए कहा और यह काम मुझसे न हो सका।" किसान के लड़के ने कहा।

"यही तो न! मैं तुम्हें भेड़ की खाल और उसके दाम भी दिये देती हूँ।" कहकर उस लड़की ने उस लड़के से भेड़ की खाल ले ली। उसपर जो कुछ बाल थे, (ऊन) उन्हें काटकर, खाल और बालों के दाम किसान के लड़के को दे दिये। किसान का लड़का बड़ा खुश हुआ। वह उस लड़की से विदा लेकर घर आ गया। लड़के को खाल और उसके दाम लाया देखकर किसान बड़ा खुश हुआ—"तुझे किसने यह उपाय बताया था?" उसने पूछा।

"आदमी ने नहीं, औरत ने।" किसान के लड़के ने कहा। फिर जो कुछ गुजरा था, उसने पिता को बता दिया।

"तो तेरी अक्ल बस इतनी ही है! अगर ऐसी लड़की रास्ते में मिली थी तो उससे शादी करके उसे घर जो ले आते!" किसान ने कहा।

किसान का लड़का झट नाले की ओर गया। और वहाँ जाकर उसने लड़की से पूछा—"मुझसे शादी करोगी?" वह लड़की हँसी। वह उससे शादी करने के लिए मान गई। दोनों साथ किसान के घर गये। किसान ने उनकी धूम-धाम से शादी की।

# चोरी नहीं छुपती

## "टेलिफोन में देखो"

"हम पटाखे जला रहे हैं, सुन रहे हैं क्या पिताजी! तरह तरह की रंग बिरंगी फुलझड़ियाँ जला रहे हैं, दिखाई पड़ रही हैं क्या!"

[ १६ ]

[ "फाँसी के किले" तक पहुँचने के लिए रुद्रपुर के राजा शिवसिंह ने चन्द्रवर्मा की सहायता की। चन्द्रवर्मा चार राजकर्मचारियों और कुछ सैनिकों को लेकर पश्चिम दिशा की ओर निकल पड़ा। रास्ते में उन्हें एक नगर के अवशेष दिखाई दिये। वहाँ के एक शिलालेख द्वारा मालूम हुआ कि उस नगर का नाम करवीरपुर था। बाद में—]

करवीरपुर के खण्डहरों को पार करके पश्चिम दिशा की ओर कुछ दूर जाने के बाद चन्द्रवर्मा के रास्ते में ऊँचे पर्वत आये। उन पर्वतों को पार करना एक समस्या-सी हो गई। उस पर्वत प्रान्त में सब जगह रोड़े पत्थर थे। रसद ढोनेवाले खच्चरों के लिए पर्वत के उपरले भाग तक पहुँचना असम्भव था। रास्ता बहुत ही ऊबड़-खाबड़ था।

"जो जितनी रसद ढो सके वह उतनी पीठ पर लादकर चले, इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। हमें खच्चरों को इस जंगल में छोड़ देना होगा।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

शिवसिंह के भेजे हुए चारों राज-कर्मचारियों ने इस पर आपत्ति उठाई। पर्वतों के पार क्या है, हम नहीं जानते।

हो सकता है कि हमें वहाँ खाने की चीज़ न मिलें। उस हालत में, खच्चरों पर लदे बहुत-से खाद्य पदार्थ इस जंगल में छोड़कर, एक एक आदमी जितना ढो सके उतना लेकर पर्वतों के उस पार जाना खतरनाक है। हमें यह बात अनुचित मालूम होती है।" उन्होंने कहा।

"इस पहाड़ पर चढ़ने के लिए कहीं पगडंडी भी नहीं दिखाई देती। हमें ही रस्सियों के सहारे पहाड़ पर चढ़ना होगा। तब रस्सियों के सहारे खच्चरों को कैसे ऊपर ले जा सकेंगे? इसलिए इन खच्चरों को और कुछ रसद को इस जंगल में छोड़ना पड़ेगा।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

चन्द्रवर्मा के सुझाव का सिवाय राज-कर्मचारियों के सबने समर्थन किया। तुरत खच्चरों पर से समान उतार दिया गया। उनमें से जो कोई जो कुछ ढो सकता था उसने उसे ले लिया। उसे सिर और पीठ पर लाद कर वे पहाड़ पर एक के बाद एक धीमे धीमे चढ़ने लगे।

सवेरे सवेरे उन्होंने पहाड़ पर चढ़ना शुरू किया। ठीक दुपहर के समय वे पहाड़ पर एक ऐसी जगह पहुँचे जो कुछ समतल था। वहाँ उन्होंने भोजन पकाया, खाया, उसके बाद फिर वे पहाड़ पर चढ़ने लगे। शाम को सूर्यास्त से कुछ समय पहिले वे पहाड़ की चोटी पर थके माँदे पहुँच सके।

सब से पहिले चन्द्रवर्मा और देव चोटी पर पहुँचे। उनको जो दृश्य दिखाई दिया उसके कारण वे अत्यन्त आनन्दित हुए। पहाड़ के नीचे उन्हें एक महानगर दिखाई दिया। उस महानगर के ऊँचे बड़े मकानों पर सूर्य की किरणें इस तरह पड़ रही थीं कि उनकी आँखें चौंधियाँ गईं। नगर और

पहाड़ के बीच की जगह में फलों के बाग थे। हरियाली थी।

यह नगर किसका है? इसका नाम क्या है? अभी चन्द्रवर्मा आश्चर्य से सोच ही रहा था कि एक राजकर्मचारी उसके पास आकर, नगर को देखकर खुशी से हका-बका होकर चिल्लाया—"शिवपुर, शिवपुर...."

"यह शिवपुर है, यह तुम कैसे जानते हो? कभी इस नगर में तुम पहिले गये थे?" चन्द्रवर्मा ने उससे पूछा।

"जी, इस शिवपुर में कुछ समय पहिले मैं एक महीना रहा था। यह रुद्रपुर राज्य के पश्चिमी सीमा का नगर है। इसके बाद रेगिस्तान है। शिवपुर के राजप्रतिनिधि, वीरमल्ल को भी मैं जानता हूँ।" राजकर्मचारी ने कहा।

"तो तुम रुद्रपुर से शिवपुर का रास्ता अच्छी तरह जानते हो? पर तुमने यह हमसे कभी कहा नहीं।" चन्द्रवर्मा ने सन्देह करते हुए पूछा।

यह प्रश्न सुनकर राजकर्मचारी कुछ घबराया। "हुजूर, जिस रास्ते में पहिले यहां आया था, वह यह न था। राजधानी

रुद्रपुर से शिवपुर तक और एक रास्ता भी है। पर उसे मैं अच्छी तरह नहीं जानता।"

चन्द्रवर्मा और राजकर्मचारी अभी बातें कर रहे थे कि पहाड़ के नीचे उन्हें बिगुल की ध्वनि सुनाई पड़ी। तुरत उसके उत्तर में नगर की चार दिवारी के बुर्ज से, नगाड़ों का भयंकर निनाद हुआ। उसी समय धनुष, बाण, भाले लिये कुछ सैनिक बुर्ज पर आये।

चन्द्रवर्मा जान गया कि उनको शत्रु समझकर वे इन संकेतों के द्वारा उनके आगमन की घोषणा कर रहे थे। इससे

पहिले कि बुर्जवाले उन पर बाण छोड़ते चन्द्रवर्मा ने यह आवश्यक समझा कि उनको यह सूचित किया जाय कि वे मित्र हैं। नहीं तो आपत्ति सम्भव थी। तुरत अपनी तलवार की नोक पर एक सफ़ेद कपड़ा लगाकर चन्द्रवर्मा ने फहराया।

बुर्ज पर आये हुए सैनिक एक क्षण पहाड़ की चोटी पर देखते खड़े रहे। इतने में एक हट्टाकट्टा, कद्दावर व्यक्ति और सैनिकों को धकेलता सामने आया। धनुष पर बाण चढ़ाकर उसने चन्द्रवर्मा की ओर छोड़ा। तेजी से बाण आया और चन्द्रवर्मा से गज भर की दूरी पर जा गिरा। उस बाण में एक कागज पिरोया हुआ था। सब को आश्चर्य हुआ।

चन्द्रवर्मा ने बाण निकाला और उसमें बँधे कागज को खोलकर पढ़ा। शिवपुर का किलेदार, आपका नाम, नगर, और इस ओर किसलिये आये हैं, यह जानना चाहता है। यदि तुरत उत्तर न दिया गया, तो शत्रु समझ कर सर्वनाश कर दिया जायेगा। सावधान।

चन्द्रवर्मा ने रुद्रपुर के राजा के दिये हुये आज्ञापत्र को बाण से बाँधकर, उसे

किले के बुर्ज पर छोड़ा। थोड़ी देर में बुर्ज पर कोलाहल शुरु हो गया। चन्द्रवर्मा और उसके आदमियों के स्वागत में सैनिक जयजयकार करने लगे।

पहाड़ से नगर की ओर सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। उनपर से चन्द्रवर्मा और उसके साथी चलकर थोड़ी देर में किले की खाई के पास पहुँचे। तब तक कुछ सैनिक यहाँ आकर जमा हो गये थे। उनको देखते ही चन्द्रवर्मा के आश्चर्य और आनन्द की सीमा न रही। इसका कारण यह था कि सैनिकों के आगे उनके सरदार की वरदी में उसका पुराना मित्र सुबाहु उसको दिखाई दिया।

सुबाहु भी अपने युवराज चन्द्रवर्मा को तुरत पहिचान गया। तुरत उसने अपना हाथ हिलाया—इसका मतलब यह था कि वे किसी को न जानने दें कि उन दोनों ने एक दूसरे को पहिचान लिया था। चन्द्रवर्मा यह जान गया, जल्दी जल्दी चलकर, सुबाहु के समीप पहुँचकर उसने आदरपूर्वक उसको नमस्कार किया। "क्या आप शिवपुर के सेनापति हैं? मुझे राजप्रतिनिधि वीरमल्ल से मिलना है।

उनसे कुछ मुख्य विषयों पर बातचीत करनी है।"

"अच्छा। पहिले आपके और आपके आदमियों के रहने, खाने-पीने की व्यवस्था करनी होगी। कुछ आराम करने के बाद आप राजप्रतिनिधि को देख सकते हैं। कहते हुए सुबाहु ने अपने सैनिकों को चन्द्रवर्मा के आदमी सौंप दिये।

सैनिकों और चन्द्रवर्मा के आदमियों के किले में चले जाने के बाद सुबाहु ने भक्तिपूर्वक चन्द्रवर्मा को नमस्कार किया—"महाराज! मैं बहुत भाग्यशाली हूँ। मैंने न सोचा था कि इस जन्म में मैं फिर आपको देख सकूँगा। आज सुदिन है। आइये, घर आकर सब बातें की जायें।" कहकर सुबाहु ने किले का मार्ग दिखाया।

सुबाहु के घर में पहुँचने के थोड़ी देर बाद चन्द्रवर्मा ने उसके बारे में सब कुछ जान लिया। उस दिन शत्रुओं से पीछा छुड़ाने के लिए वह चन्द्रवर्मा के साथ नदी में कूदा था। वह बहता-बहता एक घाटी में जा लगा। कुछ दिनों बाद धीरमल्ल भी उसको उन पहाड़ों में दिखाई दिया। सर्पकेतु से वह लड़ता रहा। आखिरी युद्ध में पूरी तरह वह हरा दिया गया। बचे-खुचे सैनिकों को लेकर वह जंगलों में घूमता रहा। कुछ दिनों बाद सब मिलकर रुद्रपुर के राजा, शिवसिंह के यहाँ नौकरी करने आये। उन्होंने ही उन्हें शिवपुर भेजा। शिवसिंह के यहाँ जब नौकरी के लिए आये, तभी धीरमल्ल ने अपना नाम वीरमल्ल बताया था। उसका ख्याल था कि ऐसा करने से सर्पकेतु को उसके पते-ठिकाने के बारे में न मालूम हो सकेगा।

सुबाहु के साथ नदी में कूदने के बाद क्या क्या बीती थी, चन्द्रवर्मा ने वह सब

विस्तारपूर्वक बताया। सब बताने के बाद, चन्द्रवर्मा ने यह भी बताया कि वह किस काम पर फिलहाल आया हुआ था। "कांसे का किला" नाम सुनते ही सुबाहु चकरा गया।

"महाराज, अब हमारे बुरे दिन लद गये हैं। अच्छे दिन आ रहे हैं। सच बात तो यह है कि इस समय शहर में धीरमल नहीं है। हमने इस रहस्य को किसी को नहीं बताया है। हमें पता लगा है कि सर्पकेतु कुछ सेना के साथ कांसे के किले की ओर जा रहा है। उसके पास कितनी सेना है, उसकी क्या शक्ति है, यह जानकर, अगर सम्भव हुआ तो उसको रास्ते में ही मारने के लिए धीरमल कुछ सेना को साथ लेकर, दो रोज पहिले ही बिना किसी को बताये नगर से गये हैं।" सुबाहु ने कहा।

सर्पकेतु का नाम सुनते ही चन्द्रवर्मा खौल उठा। यह देख सुबाहु ने कहा—"महाराज, आज सर्पकेतु केवल वीरपुर का ही राजा नहीं है, परन्तु सारे महिष्मती राज्य का राजा है। राजा यशोवर्धन मर चुके हैं। उनका बड़ा लड़का तपोवर्धन

बैरागी बनकर जंगलों में घूम रहे हैं। उसने गुणवर्धन को विश्वास दिलाया कि वह उसकी सहायता करेगा, पर जब उनसे उसका काम पूरा हो गया तो सर्पकेतु ने उन्हें चुपचाप मरवा दिया और खुद गद्दी पर जा बैठा।"

"इतना सब कुछ है, बड़ा राज्य है, फिर भी धन का लालच न गया। "कांसे के किले" की सम्पत्ति लेने निकला है।" चन्द्रवर्मा ने कहा।

"सर्पकेतु के इस अभियान में सिर्फ़ धन लोभ ही नहीं, राज्य लोभ भी दिखाई

देता है। कुछ भी हो, उसका शिवपुर पर यकायक आक्रमण न करना ही अच्छी किस्मत समझना चाहिए। गुप्तचरों द्वारा हमें पहिले ही मालूम हो गया है कि वह किस रास्ते "काँसे के किले" की ओर जा रहा है।" सुबाहु ने कहा।

सुबाहु यह कह ही रहा था कि एक दूत ने आकर उसके हाथ में एक पत्र दिया। सुबाहु उसको देखते ही चकित हो उठा। पूरी तरह पढ़ने के बाद उसने वह पत्र चन्द्रवर्मा को दिया।

चन्द्रवर्मा ने वह पत्र पढ़ा। वह पत्र धीरमल्ल ने सुबाहु को लिखा था। उसमें यह था—"धीरमल्ल अपनी कुछ सेना के साथ, सर्पकेतु की महान सेना से शिवपुर के उत्तर में रेगिस्तान में मिला। यह जानकर कि उतनी बड़ी सेना से आमने सामने खड़े होकर युद्ध करना मूर्खता थी, वह पीछे मुड़ा। पर यह बात सर्पकेतु को मालूम हो गई। उसने कुछ सेना लेकर धीरमल्ल का पीछा किया।" धीरमल्ल अपनी टुकड़ी लेकर शिवपुर की ओर भागा आ रहा था। इसलिए उसने सुबाहु को लिखा था कि थोड़ी सेना नगर के संरक्षणार्थ छोड़कर बाकी सेना लेकर वह उसकी मदद के लिए आये।"

"यह एक अचिन्तित दुर्घटना है, महाराज! सेनापति धीरमल्ल के इस नगर के पहुँचने से पहिले यदि सर्पकेतु से भिड़न्त हो गई तो उसकी पराजय तो होगी और इस नगर का भी नाश होगा। इसलिए बची सेना के साथ उनकी मदद के लिए जाना ही उचित है।" सुबाहु ने कहा। (अभी है)

# प्रतिज्ञा

सिम्बलेन नाम का राजा ब्रिटेन पर राज्य किया करता था। उसके दो लड़के थे। इमोजेन नाम की लड़की के जन्म के बाद, उसकी पत्नी मर गई थी। सिम्बलेन के दोनों लड़के जब छोटे ही थे कि उन्हे कोई उठा ले गया। फिर उनका कहीं पता न लगा।

पहिली पत्नी के गुजर जाने के बाद सिम्बलेन ने फिर विवाह किया। उसकी दूसरी पत्नी के लिए भी यह दूसरी शादी थी। पहिले पति से उसके एक लड़का था। उसको अपनी सौतेली लड़की, इमोजेन पर द्वेष था, पर इस दृष्टि से कि यदि वह राजा की मृत्यु के बाद गद्दी पर बैठी तो उसका लड़का राजा हो सकेगा, वह उन दोनों का विवाह करना चाहती थी।

परन्तु इमोजेन ने उसकी आशाओं पर पानी फेर दिया। न उसने पिता से कहा, न सौतेली माँ से ही, और पोस्थ्यूमस नाम के युवक से विवाह कर लिया। इस युवक का पिता एक योद्धा था। वह सिम्बलेन की तरफ लड़ता-लड़ता, युद्ध में मारा गया था। तब उसकी पत्नी गर्भवती थी, वह भी एक लड़के को जन्म देकर मर गई। सिम्बलेन ने उस अनाथ बच्चे पर दया दिखाई। उसको अपने महल में रख कर पाला पोसा। उसी ने ही उसको पोस्थ्यूमस नाम दिया था। (पोस्थ्यूमस का अर्थ, पिता के मरने के बाद पैदा होनेवाला है।)

इमोजेन और पोस्थ्यूमस बचपन से एक दूसरे को चाहते थे। दोनों ने एक ही गुरु के पास पढ़ा लिखा था। समय के

विलियम शेक्सपियर

हमेशा पहिनना।" इसी तरह पोस्थ्यूमस ने भी उसके हाथ में एक कंगन पहिनाया।

पति के चले जाने के बाद, इमोजेन को जीवन नीरस लगने लगा। रोम पहुँचने के बाद पोस्थ्यूमस ने नये नये मित्र बना लिये। एक दिन उनमें वाद-विवाद चल पड़ा कि किस देश की स्त्रियाँ अधिक पतिव्रता होती हैं। हर किसी ने अपने देश की स्त्री की प्रशंसा की। सब सुनने के बाद पोस्थ्यूमस ने कहा—"चाहे तुम कुछ भी कहो मेरी पत्नी इमोजेन से बढ़कर इस संसार में कोई पतिव्रता नहीं है।"

इमाकियो नाम के रोमन युवक को यह बात बिल्कुल पसन्द न आई। उसका विश्वास था कि रोमन स्त्रियों से अधिक पतिव्रता स्त्रियाँ कहीं न थीं। उसने पोस्थ्यूमस से आखिर पूछा—"अगर यह सिद्ध कर दिया कि तुम्हारी पत्नी पतिव्रता नहीं है तो क्या शर्त रही?"

"मेरे प्रेम के चिह्न के रूप में मेरी पत्नी के पास मेरा कंगन है। अगर तू उसके पास से वह ला सका, तो मैं उसकी अंगूठी दे दूँगा।" पोस्थ्यूमस ने कहा। अगर वह यह साबित न कर पाया

साथ उनका परिचय प्रेम में परिवर्तित हो गया। उन दोनों ने बिना किसी को बताये विवाह भी कर लिया। यह रहस्य पहिले रानी को पता लगा। उसने राजा को यह बता भी दिया। सिम्बलेन को गुस्सा आया। पोस्थ्यूमस को उसने देश से निकलवा दिया। पोस्थ्यूमस ने ब्रिटेन छोड़कर रोम जाने का निश्चय किया।

पति-पत्नी ने एक दूसरे से विदा ली। उस समय इमोजेन ने अपनी अंगुली की अंगूठी निकालकर अपने पति को देते हुए कहा—"इसे हमारे प्रेम चिन्ह के रूप में

कि इमोजेन पतिव्रता न थी, तो इमाकियो ने बहुत-सा धन देना स्वीकृत किया।

इमाकियो रोम से निकला, ब्रिटेन पहुँचा। उसने इमोजेन के दर्शन करके कहा—"मैं तेरे पति का मित्र हूँ।" इमोजेन ने उसका बहुत आदर-सत्कार किया। इमाकियो जान गया कि वह वस्तुतः पतिव्रता थी और किसी भी हालत में पर पुरुष से प्रेम न करेगी। अगर उसे शर्त जीतनी थी, तो सिवाय धोखे के और कोई रास्ता न था। उसने इमोजेन की दासियों को बहुत-सी घूस दी। उनकी मदद से वह उसके शयन कक्ष में घुस गया। और एक बड़े सन्दूक में छुपकर बैठा गया।

रात में, इमोजेन के सोने के बाद वह बाहर आया। कमरे को ध्यान से देखा। वहाँ रखे आभूषणों के बारे में एक कागज पर लिख लिया। फिर इमोजेन के पास जाकर उसने उसके गले पर तिल का चिन्ह देखा। धीमे से उसके हाथ से कंगन ले लिया। फिर वह सन्दूक में जा बैठा। अगले दिन रोम के लिए वापिस निकल पड़ा।

उसने पोस्थ्यूमस से मिलकर कहा—"तेरी पत्नी, जितना तू समझ रहा है,

उतनी पतिव्रता नहीं है। मैंने एक पूरी रात उसके शयन कक्ष में काटी। उसने मुझे यह कंगन दिया है। उसके गले पर एक तिल है।"

जो इमोजेन पर तब तक प्रेम था, वह सहसा क्रोध में परिवर्तित हो गया। पोस्थ्यूमस ने अपनी अंगुली की अंगूठी निकालकर इमाकियो को दे दी। फिर उसने पिसानियो नाम के व्यक्ति को पत्र लिखा—"मेरी पत्नी इमोजेन ने धोखा दिया है, उसे तुरत मार दो। उसे भी एक पत्र लिख रहा हूँ।"

यह पिसानियो नाम का व्यक्ति इमोजेन के नौकर चाकरों में था, बहुत समझदार था। उसे पोस्थ्यूमस पर भी बड़ी भक्ति थी। उसको इस तरह की चिट्ठी लिखकर पोस्थ्यूमस ने पत्नी को एक और प्रकार की चिट्ठी लिखी—"यदि तुम पिसानियो को लेकर वेल्स देश के फलाने बन्दरगाह में आ सकी तो मैं तुम्हें वहाँ मिलूँगा।"

पति को फिर से देखने का अवकाश मिल रहा है, यह सोच इमोजेन बहुत खुश हुई। वह बिना किसी को बताये पिसानियो को साथ लेकर वेल्स के बन्दरगाह के लिए निकल पड़ी। रास्ते में पिसानियो ने उससे असली बात कह दी। परन्तु पोस्थ्यूमस की आज्ञा पर वह इमोजेन की हत्या न करना चाहता था। "किसी दुष्ट ने आपके बारे में आपके पति से चुगली की है। जब तक उस चुगली का असर नहीं चला जाता, हम कुछ नहीं कर सकते।" उसने उससे कहा।

इमोजेन ने अपने पिता के पास वापिस आना न चाहा। अगर मौका मिला तो पति से मिलने वह रोम जाना चाहती थी।

अगर जाना ही हो, तो पिसानियो ने सलाह दी कि मर्द का वेष बदलकर जाना उचित था। उसने उसको एक औषधी देते हुए कहा—"अगर स्वास्थ्य ठीक न रहे तो यह दवाई ले लेना, रानी ने मुझे यह दवा दी है।"

पिसानियो, इमोजेन का विश्वास पात्र था, उसकी हर तरह से मदद कर रहा था। इसलिए रानी ने उसको मारने के लिए वैद्य से विष माँगा। वह वैद्य जानता था कि वह दुष्ट थी। इसलिए उसने उसको बेहोशी की दवा दी, और कहा कि वह भयंकर जहर था। वह बेहोशी की दवा ही अब इमोजेन के पास पहुँच गई थी।

इमोजेन पुरुष वेष धारण करके बन्दरगाह की ओर चली। वह जंगल के रास्ते से जाती जाती एक गुफ़ा के पास पहुँची। उसे भूख सता रही थी। गुफ़ा में झाँककर देखा, उसमें मनुष्य न थे। पर यह मालूम पड़ता था कि उसमें खाद्य सामग्री रखी हुई थी। यह सोचकर कि जब उसमें रहनेवाला आयेगा तो उसे पैसे दिये जा सकते हैं, उसने तुरत वह सामग्री खाकर अपनी भूख मिटा ली।

की तरह देख भाल करता। वे जंगलों में शिकार करके जीवन निर्वाह कर रहे थे।

शिकार से आते ही उन्होंने पुरुष वेष में इमोजेन को देखा। इमोजेन ने यह कहकर कि उसने उनका भोजन खा लिया था, पैसे देने चाहे। परन्तु उन्होंने पैसे न लिये। उसके बारे में पूछताछ करने लगे। उसने कहा कि वह रोम जाना चाहती थी। उन्होंने उससे कहा—"थकान हटा लो फिर चले जाना, तब तक तुम हमारे अतिथि बनकर रहो।"

उसे यह तो न मालूम था कि वे युवक उसके भाई थे फिर भी वे उसे पसन्द आये। उन्होंने भी उसके प्रति बहुत स्नेह और आत्मीयता दिखाई। अगले दिन जब वे शिकार खेलने चले गये तो इमोजेन को लगा कि उसकी तबीयत ठीक न थी। उसने पिसानियो की दी हुई दवाई पी ली। उसके स्वास्थ्य के ठीक न होने के कारण ये थे, पति के मन का यकायक बदल जाना, दूसरा कारण भोजन था। तीसरा, बिना नींद के दो दिन सफर करना।

इमोजेन ने बेहोशी की दवा पी ली थी। उसके असर से उसे ऐसा लगा जैसे प्राण

उस गुफ़ा में रहनेवाले और कोई न....थे,....थे उसके भाई और बेलारियस, जो उनको बचपन में ही उठा ले गया था। यह बेलारियस, कभी सिम्बलेन के पास नौकरी किया करता था। पर सिम्बलेन ने उस पर निष्कारण राजद्रोह का अपराध आरोपित किया, और उसको देश निकाला दे दिया। सिम्बलेन से बदला लेने की ठानी। वह दोनों राजकुमारों को चुराकर ले आया, और इस गुफ़ा में रहने लगा। होते होते बेलारियस को उन से प्रेम होने लगा। इसलिए वह उनकी अपने पुत्रों

ही चले गये हों। शिकार से लौटने के बाद तीनों ने सोचा कि उनका अतिथि मर गया था। वे काफी देर तक दुखित रहे। आखिर वे उसे जंगल में ले गये। एक गढ़े में रखकर उस पर सूखे पत्ते डाल दिये।

जब दवा का असर जाता रहा तो सूखे पत्ते हटाकर इमोजेन उठी। उसका गुफा में जाना, वहाँ तीन आदमियों का आतिथ्य मिलना, आदि, उसको ऐसा लगा जैसे कोई स्वप्न हो। वह बन्दरगाह पहुँचने के लिए फिर चल पड़ी।

इस बीच, रोम और ब्रिटेन ने एक दूसरे पर युद्ध घोषित कर दिया। रोम से ब्रिटेन की तरफ सेना निकली। इस सेना में पोस्थ्यूमस भी था। पिसानियो ने उसको पत्र लिख दिया था कि उसने इमोजेन को मार दिया था। तब से उसको जीवन से वैराग्य-सा हो गया था। यद्यपि उसका अब भी विश्वास था कि इमोजेन दोषी थी, तो भी यह सोच कि उसके कारण वह मर गई थी, वह दुखी था। युद्ध में वह मारा जा सकता था। यदि ब्रिटेन पहुँचेगा तो सिम्बलेन उसे फाँसी पर चढ़वा ही देगा। इसलिए ही वह इस सेना में भरती हुआ था।

रोम की सेना, उस जंगल में से आ रही थी जहाँ इमोजेन थी। रास्ते में सैनिक उसे पकड़कर, सेनापति के पास ले गये। उसने अभी पुरुष वेष ही धारण कर रखा था। सेनापति ने उसे देखकर सोचा कि कोई अक़्लमन्द लड़का नजर आता है। उसने उसको अपना नौकर रखा।

जल्दी ही दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। इस युद्ध में राजा सिम्बलेन की जान खतरे में आ पड़ी। उस समय बेलारियस भी अपने दोनों लड़कों के साथ लड़ा और उसने राजा की रक्षा की। रोम की सेना

की तरफ़ से आये हुए पोस्थ्यूमस ने भी सिम्बलेन की रक्षा की। इन सब के पराक्रम से होती होती पराजय, विजय में बदल गई।

रोम का सेनापति, पोस्थ्यूमस और इमोजेन को धोखा देनेवाला, इमाकियो, और कई लोग सिम्बलेन द्वारा कैदी बना लिये गये। पोस्थ्यूमस, जैसा उसने सोचा था, युद्ध में नहीं मारा गया। इसलिए ब्रिटिश सेनापति को उसने अपने को कैदी के रूप में सौंप दिया। पुरुष वेष में इमोजेन भी रोमन सेनापति के साथ कैद कर ली गई। उसको कोई नहीं पहिचान सका। उसने देखा कि वह अंगूठी, जो उसने अपने पति को दी थी, इमाकियो के पास थी। वह यह कल्पना न कर सकी कि उसके पास वह कैसे पहुँची थी। उसने अपने पिता के साथ पिसानियो को भी देखा। सिर्फ़ उसने ही उसे पहिचाना।

बेलारियस और उसके दत्तक पुत्रों ने अपने अतिथि को पहिचान तो लिया था, पर वह तो मर गया था। उन्होंने सोचा कि शायद उससे मिलता जुलता कोई होगा।

पराजित सेनापति ने सिम्बलेन से कहा—"महाराज, सुना है, आप पैसा लेकर युद्ध के कैदियों को नहीं छोड़ते हैं, उन्हें आप मरवा देते हैं। मैं खुशी से मरने के लिये तैयार हूँ। पर मेरी प्रार्थना है कि आप इस युवक को न मरवायें।" उसने इमोजेन को दिखाया।

सिम्बलेन, इमोजेन को देखकर तो पहिचान न सका, पर उसमें उसके प्रति स्वभाविक प्रेम जाग उठा। "बेटा! मैं तुम्हारे प्राण न लूँगा। अगर तुम कुछ चाहते हो, तो माँगो।" उसने कहा।

"मेरी प्राण भिक्षा न माँगना, क्यों!" रोम के सेनापति ने कहा।

इमोजेन ने कहा—"इससे बढ़कर एक और बात है। मैं नहीं माँगूगी। उसने इमाकियो के हाथ की ओर देखकर कहा—"यह मालूम कीजिये कि इस आदमी के पास यह अंगूठी कैसे आई? यही मेरी प्रार्थना है।"

"अगर तुमने यह न बताया कि तुम्हारे पास यह अंगूठी कैसे आयी, मैं तुम्हारी बोटी-बोटी कटवा दूँगा।" सिम्बलेन ने इमाकियो से कहा। इमाकियो ने बिना

कुछ छुपाये सब कुछ कह दिया। कैसे उसने और पोस्थ्यूमस ने शर्त लगाई थी, कैसे वह शयन कक्ष में घुसा था; कैसे उसने कंगन चुराया था। और कैसे उसकी बात पर विश्वास करके पोस्थ्यूमस ने वह अंगूठी दी थी, आदि सब उसने विस्तारपूर्वक बता दिया।

यह सुनते ही पोस्थ्यूमस के शोक की सीमा न रही। उसने अपनी पत्नी पर कितना अन्याय किया था, यह सोच वह बहुत दुःखी हुआ। इमोजेन उसका शोक न देख सकी, वह पुरुष वेष निकालकर अपने पति के पास गई।

इमोजेन को देखकर, उसके पति को जितनी खुशी हुई उतनी ही उसके पिता को भी हुई। उसने पोस्थ्यूमस को, अपने दामाद के रूप में स्वीकृत किया और उसको देश निकाले की जो सजा दी थी, वह भी रद्द कर दी।

इस खुशी के मौके पर बिलारियस भी सिम्बलेन के पास, अपने दत्तक पुत्रों को लेकर गया। उसने उसको बताया कि वह कौन था। "महाराज, ये हैं आपके लड़के।" उसने उन नवयुवकों को दिखाया। सिम्बलेन की खुशी का कोई ठिकाना न था। उसने रोम के सेनापति को छोड़ दिया, और उसके साथ सन्धि कर ली। आखिर, धोखा देनेवाले इमाकियो को भी कोई सजा न दी गई।

इस तरह सिम्बलेन, अपने पुत्रों और पुत्री, और दामाद के साथ सुख पूर्वक रहने लगा। परन्तु उसकी दूसरी पत्नी उतना सुख न देख सकी। वह बीमार होकर मर गई।

# तमेड़ की लकड़ी

पश्चिमी तट पर पहाड़ी प्रान्त में, बदरी नाम का ग्राम है। उसमें एक मछियारा रहा करता था। वह रोज अपनी तमेड़ पर समुद्र में जाता, मछली पकड़कर जीवन निर्वाह किया करता। परन्तु कुछ दिनों के बाद उसकी तमेड़ टूट गई। एक और तमेड़ बनाने के लिए वह एक अच्छे ट्रँट को खोजता एक दिन शाम को पहाड़ पर गया। बहुत दूर गया पर कहीं उसे तमेड़ के लायक ट्रँट न मिला। इतने में आकाश में घने बादल छा गये। अन्धेरा हो गया। क्योंकि वह उस प्रान्त से परिचित न था इसलिए वह घर की ओर चला।

परन्तु मछियारा कहीं रास्ता भटक गया होगा, क्योंकि जहाँ देखो, वहाँ पहाड़ ही पहाड़ थे। समुद्र कहीं न दिखाई दिया। चारों तरफ़ घना अन्धेरा। हाथ को हाथ न दिखाई देता था। रिमझिम भी होने लगी। "बारिश में भीगते, भूख से मरते क्या सारी रात मुझे इस पहाड़ पर ही काट देनी होगी!" वह यह सोच रहा था कि उसको दूरी पर टिमटिमाती रोशनी दिखाई दी।

मछियारे की जान में जान आई। वह उस तरफ़ गया जिस तरफ़ से रोशनी आ रही थी और एक कुटिया में पहुँचा। बहुत देर किवाड़ खटखटाने के बाद एक बूढ़े ने किवाड़ खोला। "मैं रास्ता भटक गया हूँ। क्या थोड़ा खाना देकर मुझे रात को यहाँ सोने दोगे, बाबा!" मछियारे ने पूछा।

"अन्दर आओ। यहाँ से पाँच छः मील की दूरी तक कहीं कोई घर नहीं है।" बूढ़े ने कहा।

प्रभाकर

अन्दर बूढ़े की पत्नी कोई खाने की चीज़ बना रही थी। उसने मछियारे से कुछ न कहा। बूढ़े से भी उसने कुछ न कहा। खाना बनने के बाद तीनों हल्का खाकर लेट गये। मछियारे ने आँखें मूँद रखी थीं पर उसे नींद न आ रही थी। "ये बूढ़े इस निर्जन प्रान्त में क्यों रह रहे हैं? क्या वे आपस में एक दूसरे से बातचीत नहीं करते हैं? इनका क्या भेद है, मालूम करना होगा।" उसने सोचा।

आधी रात के समय बूढ़ा धीमे से उठा बिल्ली की तरह चलता कोने में रखे सन्दूक के पास गया। उसने सन्दूक खोलकर उसमें से एक नीले रंग की टोपी निकाली। मछियारे ने यह देखा। बूढ़े ने उस टोपी को सिर पर रखकर कहा—"काश्मीर काश्मीर" तुरत बूढ़ा गायब हो गया। फिर बुढ़िया उठी। सन्दूक के पास जाकर उसने एक और नीले रंग की टोपी निकाली। सिर पर रखकर "काश्मीर, काश्मीर" कहा। फिर वह भी अन्तर्धान हो गई।

मछियारा यह सब देखकर कुछ देर तक अचरज करता रहा। यह पता लगा कर कि बूढ़े, बुढ़िया वहाँ न थे, वह भी उठकर सन्दूक के पास गया। उसको खोला। उसमें दो तीन और नीले रंग की टोपियाँ थीं। उनमें से एक लेकर उसने सिर पर रखकर कहा—"काश्मीर काश्मीर...."

तुरत उसकी आँखें भारी हो मुँद गईं। उसे लगा जैसे उसके ऊपर बहुत तेज़ी से हवा चल रही हो। जब हवा की तेज़ी कम हुई और उसने आँखें खोलीं तो वह एक राजमहल की भोजनशाला में था। बूढ़ा और बूढ़ी, राजा के भोजन में जो कुछ बच गया था, उसे खाकर आराम से

गप्पें मार रहे थे। सोने के लोटे व थाल उनके गट्ठरों में चले जा रहे थे।

मछियारे को देखते ही दोनों ने, नीले रंग की टोपी सिर पर रखकर कहा—"बद्री पहाड़, बद्री पहाड़" वे अन्तर्धान हो गये।

उनके चले जाने के बाद मछियारे ने सोचा कि अब उसे रोकने-टोकने वाला कोई न था। उसने पेट-भर खाया। फिर उसे राजा की अंगूरी दिखाई दी। उसे उसने खूब पिया और नशे में वह वहीं सो गया।

अगले दिन राजा के नौकर मछियारे को भोजनशाला में देखकर, उसे बाँधकर, राजा के पास ले गये—"महाराज, रोज जो बिना किसी को दीखे राजमहल में चोरी करता आया है, वह यही है!"

"इतने चालाक चोर का जीवित रहना किसी के लिए श्रेयस्कर नहीं है। इसे एक स्तम्भ से बाँधकर, उसके चारों ओर चिता बनाकर, इसको जीते जी जला दिया जाय" राजा ने आज्ञा दी।

मछियारे को चौक में ले आया गया। वहाँ एक खम्भा गाड़ा गया और उसको उससे बाँध दिया गया। फिर उसके चारों

ओर चिता बनाई गई। चिता को आग लगा दी गई।

इस डाकू को देखने नगर के लोग, बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सब आये। क्योंकि राजा के महल में घुसनेवाले डाकू को पकड़ने के लिए बहुत प्रयत्न किया गया था। यद्यपि राजमहल के चारों ओर सैनिकों का कड़ा पहरा था तो भी चोर उनकी आँखों में धूल झोंक कर अन्दर चला जाता और बाहर भी चला आता। लोगों का ख्याल था कि यह चोर, चोर नहीं कोई भूत था। इसलिए

उसके पकड़े जाते ही लोग उसको देखने आये।

आग पास आ रही थी। मछियारे ने सोचा कि उसकी आयु समाप्त हो चुकी थी। इतने में उसे नीले रंग की टोपी याद आई। उसने न्यायाधिकारी की ओर मुड़कर कहा—"हुजूर, मेरी एक आखिरी इच्छा है। मेरी टोपी मेरे सिर पर रख दीजिये। मुझे वह बहुत पसन्द है। मुझे उसके साथ मरने दीजिये।"

यह इच्छा न्यायाधिकारी को ठीक लगी। उसकी आज्ञा पर एक सैनिक ने टोपी ले जाकर, उसके सिर पर रखी। मछियारे ने तुरत कहा—"बद्री पहाड़, बद्री पहाड़" वह यह कहता कहता अदृश्य हो गया। उसके साथ जिस खम्भे के साथ वह बाँधा गया था, वह भी अदृश्य हो गया। लोग जान गये कि वह चोर आदमी न था।

मछियारा बद्री पहाड़ पर पहुँचा। उसके बन्धन खोलने के लिए कोई मिलेगा कि नहीं, यह सोचते उसने सिर उठाया था कि उसको एक आदमी दिखाई दिया। "भाई भाई, तुम्हारा भला होगा, जरा मेरे बन्धन काट दो।" उसने उस आदमी से कहा।

"तुम इस जगह, इस खम्भे के साथ कैसे बाँधे गये? यह तो कोई अच्छा देवदारु मालूम होता है।" उस आदमी ने उसके बन्धन खोलते हुए कहा।

"हाँ हाँ, मुझे तमेड़ के लिए लकड़ी चाहिये थी, मैं ले आया हूँ। काश्मीर के राजा ने स्वयं मुझे यह दी है।" कहता वह मछियारा उस खम्भे को कन्धे पर डाल घर की ओर चल पड़ा।

# आखिर क्यों ?

एक अमीर किसान की एक लड़की थी। उसकी एक बड़े घराने में सगाई हुई। शुभ मुहूर्त निश्चय किया गया। विवाह की जोर शोर से तैयारियाँ होने लगीं।

किसान के बैलों को अधिक काम दिया जाने लगा। उन्हें न खाने की फुरसत, न आराम की फुरसत। एक दिन वे आपस में यों कहने लगे :—

"देखा! मालिक की लड़की की शादी है, इसलिए सब खुश हो रहे हैं। हम ही जो तोड़ मेहनत कर रहे हैं। हम से तो वे भेड़ बकरी ही भलीं। उनको आज कल क्या नहीं खिलाया जा रहा है। और कोई यह भी नहीं देखता कि हमने खाया है कि नहीं।

यह सुन घर के कुत्ते ने उनसे कहा—"अरे पागल! भेड़ बकरियों को शादी के दिन काटकर दावत में खा लिया जायेगा। इसलिए ही उन्हें, यों दबकर खिलाया जा रहा है, क्यों उनको देखकर तुम डाह करते हो!"

# अधिकार प्रदर्शन

# स्वतंत्रता के लिए
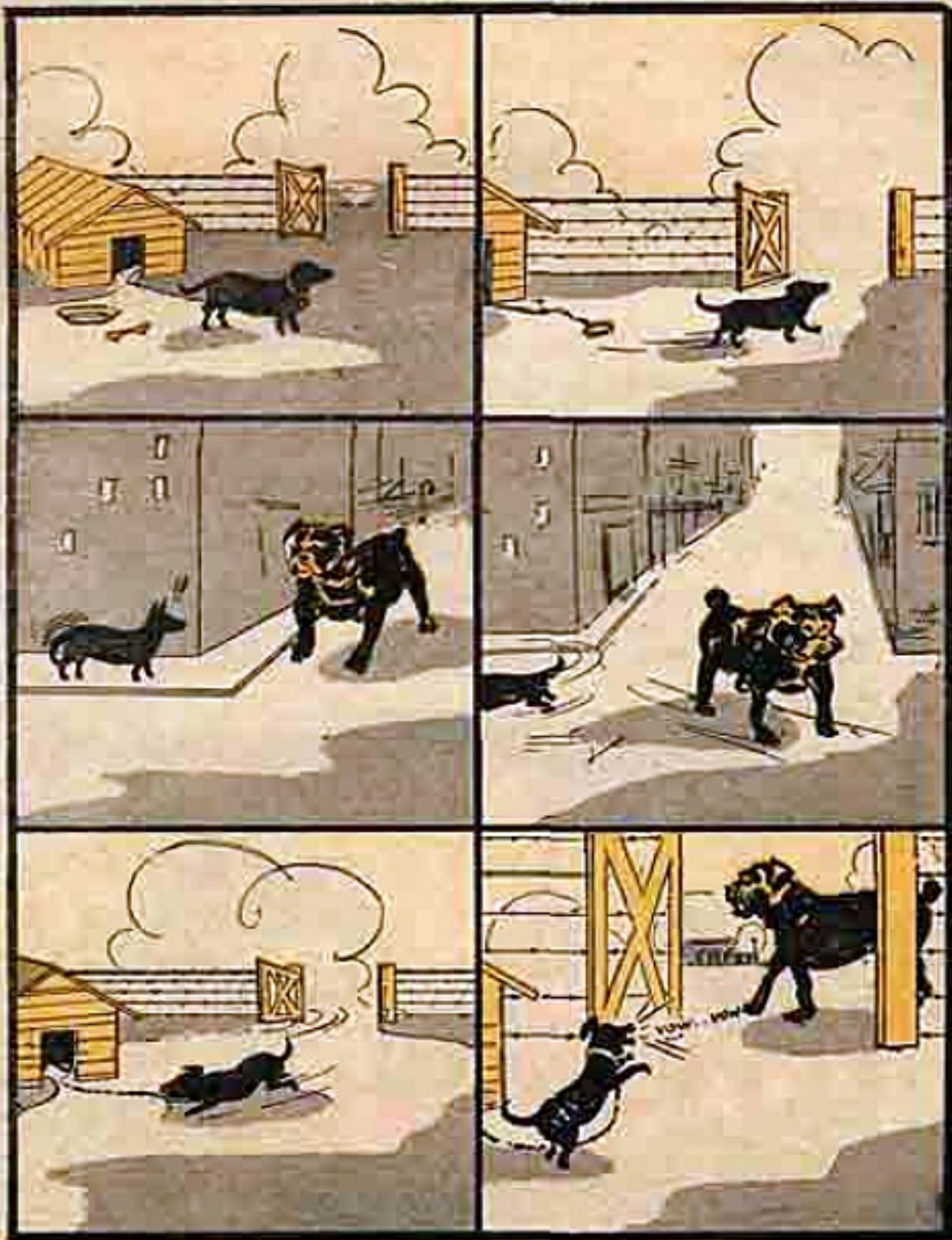
यूरुप के पर्वतों में सब से ऊँचा एल्प्स है। इन पहाड़ों में लुसर्न नाम की एक बड़ी झील है। स्विजरलेन्ड की प्रजा के स्वतन्त्रता युद्ध के लिए यह झील रंग-भूमि बनी। यह युद्ध सात सौ वर्ष पहिले हुआ।

लुसर्न झील के चारों ओर बड़ी-बड़ी घाटियाँ हैं। इन घाटियों में रहनेवाले बहादुर और स्वतन्त्रता प्रिय होते हैं। आस्ट्रिया देश के राजाओं ने उनको अपने आधीन किया और अपने गवर्नरों द्वारा वे उनका शासन किया करते। इनके अत्याचारपूर्ण शासन के विरुद्ध बहुत से युद्ध हुये। आखिर वहाँ के निवासियों की विजय हुई। उन्होंने एक स्वतन्त्र देश की स्थापना की। यह देश ही स्विजरलेन्ड है।

लुसर्न के चारों ओर का ईलाका जिलों में बंटा हुआ था। उनमें उरी भी एक था। इस जिले के एक गाँव में विलियम टेल नाम का एक शिकारी रहा करता था। वह शामाय नामक हरिणों का शिकार किया करता। इन हरिणों का चमड़ा बहुत मुलायम होता है, और बहुमूल्य भी। वह एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदकर हरिणों को भगाता और एक ही बाण में उनको गिरा देता। वह जिस घाटी में रहता था, उसमें उसकी बराबरी करनेवाला कोई और शिकारी न था। वह कभी किसी को तंग न करता। सीधा-सादा आदमी था। सवेरे जाकर शामाय हरिणों का शिकार करता, लुसर्न नगर में जाकर उनकी खालें बेचता। जो कुछ पैसा मिलता उससे अपने परिवार का पोषण

गुरुदयाल सिंह

करता। उसका जीवन कतई निराडम्बर था। उसमें कोई दिखावा न था।

सर्दियों के दिन थे। सवेरे-सवेरे विलियम टेल शिकार के लिए निकल पड़ा। शाम तक एक हरिण मारा और उसको कन्धे पर डाला। जाते-जाते रास्ते में एक जंगली बत्तख मारी और दोनों को बाँधकर वह घर की ओर चलते-चलते झील ल्यूसर्न के पास पहुँचा।

उस समय तूफ़ान आनेवाला था। बहुत तेज हवा के कारण झील में बड़ी-बड़ी लहरें उठ रही थीं। आकाश में घने बादल छा रहे थे। विलियम टेल जब झील तक पहुँचा, तो वहाँ एक और आदमी आया। वह किश्तीवाले से कह रहा था "जो माँगो दूँगा, मुझे झील के पार ले चलो।"

"लहरों को तो देखो। तूफ़ान आनेवाला है। किश्ती नहीं जा सकती, तूफ़ान को जरा थमने दो।" किश्तीवाला कह रहा था।

"गवर्नर के सैनिक मेरा पीछा कर रहे हैं। अगर मैं पकड़ा गया तो वे मुझे जिन्दा न छोड़ेंगे। मेरी रक्षा करो।" वह व्यक्ति गिड़गिड़ा रहा था।

परन्तु किश्तीवाला किसी भी हाल्त में उसको पार ले जाने के लिए नहीं मान रहा था। यह सब विलियम टेल देखता खड़ा था। उसने किश्ती में कूद कर कहा— "आओ, मैं तुम्हे पार लगा देता हूँ।"

जब वह व्यक्ति किश्ती में चढ़ गया, तो विलियम टेल जोर से चप्पू चलाता किश्ती को भयंकर तरंगों में ले गया। किश्ती धक्के खा रही थी पर विलियम टेल उसको होशियारी से आगे ले जा रहा था। किश्ती कोई तीस हाथ दूर गई होगी कि गवर्नर के सैनिक किनारे पर आये। पर अब वे क्या कर सकते थे!

"वे तेरा पीछा क्यों कर रहे हैं! क्या हुआ है!" विलियम टेल ने उस व्यक्ति से पूछा।

"मैं आजाद हूँ। गवर्नर को मुझ से चिढ़ है। यही नहीं, उस दुष्ट की नजर मेरी पत्नी पर भी है। मैं जब जंगल में ईंधन काट रहा था, वह मेरे घर गया। मेरी पत्नी के सामने ऊँटपटांग बकवास की। नहाने के लिए पानी गरम करने को कहा। वह मुझे ढूँढती आई। मुझे सारी बात बताई। मैं आपे से बाहर हो गया। उसी समय मैंने घर जाकर कुल्हाड़ी से उसके दो टुकड़े कर दिये।" उस व्यक्ति ने कहा।

विलियम टेल ने कुछ न कहा परन्तु वह और तेजी से चप्पू चलाने लगा। उसके जिले में भी स्वतन्त्र किसान थे। उनको अपने राजा पर भी अभिमान था। परन्तु गवर्नर गेस्लर उनकी आजादी लूटने की हर तरह से कोशिश कर रहा था।

विलियम टेल, शिज़ जिला के बूनेन ग्राम में किश्ती ले गया। और उस व्यक्ति को एक स्वतन्त्र नागरिक के घर रखकर वह अपने घर की ओर चला।

गवर्नर गेस्लर को अपनी शक्ति और अधिकारों पर गर्व था। उसने एक किला बनवाया जिसकी दीवारें तीन फीट मोटी थीं। उसने बहुत-से लोगों को उसमें कैद करने के लिए बहुत-से उपाय सोचे।

एक दिन गेस्लर के सैनिकों ने अल्टडार्फ नामक ग्राम के चौक में एक डंडा गाड़ा और उसपर गवर्नर की टोपी रखी। यह टोपी पत्ते के रंग की थी। इस पर एक पंख भी लगा था। फिर उन्होंने तालियाँ बजा बजाकर लोगों को जमा किया, और कहा—"स्त्रियो और पुरुषो, सब सुनो। जो कोई इस तरफ से जायेगा उसको टोपी के सामने झुककर अभिवादन करना होगा।

जो ऐसा न करेगा वह गवर्नर और राजा का अपमान कर रहा होगा। उसको ले जाकर कैद में डाल दिया जायेगा। यह सबको बताया जाता है।" यह मुनादी पिटवा दी गई।

रास्ते में आने-जानेवालों से अभिवादन कराने के लिए दो सैनिक वहीं खड़े हो गये। पर बड़े लोग उस तरफ न आये। क्योंकि उन्होंने मुनादी सुन ली थी, इसलिए घूम फिर कर वे दूसरे रास्तों से जाने लगे। परन्तु कुछ बच्चे किल्कारियाँ भरते, डंडे की परिक्रमा करते और झुक-झुककर टोपी को सलाम करने लगे। यह उनके लिए एक खिलवाड़-सा था।

गेस्लर की इस घोषणा के कारण तीन जिलों के लोगों को बड़ा गुस्सा आया। एक दिन रात को झील के किनारे के एक जंगल में उनकी एक गुप्त सभा हुई। उस सभा में यह निश्चय किया गया कि आगामी नव वर्ष के पहिले की रात को सब प्रान्तवाले अपने अपने प्रान्तों के किलों पर हमला करें। यह सिवाय उनके, जिन्होंने सभा में भाग लिया था, किसी और को न मालूम हो।

विलियम टेल इस सभा में न गया था। उसको इस विद्रोह के बारे में भी कुछ न मालूम था। एक दिन ऐसा मौका हुआ कि वह अपने लड़के को लेकर अल्टडार्फ़ की तरफ़ आया। वह जब दायें हाथ में धनुष-बाण पकड़कर और बायें से लड़के का हाथ पकड़कर गली गली में से जा रहा था, तो लोग उसको देखकर खुश हुए।

विलियम टेल अभी डंडे के पास से कुछ कदम आगे बढ़ा था कि दो भालों से उसका रास्ता रोक दिया गया। सैनिक उसके हाथ पैर जंजीरों से बांधने की कोशिश करने लगे। उन्होंने कहा—"तुमने गवर्नर की घोषणा का उल्लंघन किया है। जेल चलो।"

विलियम टेल तो बलवान था ही, उसने भालों को हटाते हुए कहा—"मैं स्वतन्त्र हूँ। मैं भगवान, राजा और उसके द्वारा नियुक्त गवर्नर को प्रणाम कर सकता हूँ पर उनकी टोपी को नहीं।"

इसी समय, गवर्नर अपने नौकर-चाकरों के साथ उस तरफ़ आया। सब ने इस तरह कवच आदि पहिने हुएथे, जैसे वे युद्ध

जिन्होंने उस गुप्त सभा में भाग लिया था। वे गवर्नर की बोटी-बोटी काटने के लिए उतावले हो रहे थे। परन्तु उनमें किसी के पास भी उस समय कोई हथियार न था।

गवर्नर ग्लेसर को भी टेल से चिढ़ थी, क्योंकि वह स्वतन्त्र था। उसने टेल से कहा—"तुमने मेरी आज्ञा का उल्लंघन किया है। मैं तुम्हें मौत की सजा दे सकता हूँ।"

"क्षमा कीजिये, आप भी कैसे चाहते हैं कि हम केवल आपकी टोपी को ही प्रणाम करें। हम स्वतन्त्र लोग हैं।" टेल ने कहा।

"तुम और तुम्हारे मित्र हथियार लेकर घूमते-फिरते हैं। मैंने आज्ञा दी हुई है कि कोई भी हथियार लेकर न फिरा करे। इस आज्ञा का उल्लंघन का क्या मतलब है, मैं तुम्हें दिखाता हूँ। तुम्हारे बाण से ही तुम्हें दंड दूँगा। यह तुम्हारा लड़का है न!" कह कर गवर्नर ग्लेसर ने अपने सैनिकों से कहा—"इस लड़के को ले जाकर उस पेड़ के पास खड़ा करो। इस सेब को उसके सिर पर रखो।

के लिए जा रहे हों। उनको देखते ही सैनिकों का हौसला बढ़ा। "हूँ, चलो जेल" वे विलियम टेल को धक्का देने लगे। परन्तु इतने में विलियम टेल को छुड़ाने के लिए ग्रामवासी क्रोध में भागे-भागे आये और चारों ओर जमा हो गये।

"मित्रो! जल्दबाजी न करो। अगर आप मुझे छुड़ाना चाहते हैं, तो मुझे किसी की मदद की जरूरत नहीं है।" टेल ने ग्रामवासियों से कहा।

इतने में गवर्नर वहाँ आ ही पहुँचा। वहाँ जमा हुये ग्रामवासियों में कई ऐसे थे,

उसके पास से अस्सी अंगुल नापो। उस दूरी से विलियम टेल अपने बाण से अपने लड़के के सिर पर रखे सेब को मारेगा। अगर यह सेब का निशाना चूक गया, और इसका लड़का मर गया तो इसे भी मरवा दूँगा।"

टेल ने गवर्नर की ओर घबराते हुये देखा। उसके ऊपर भाले तने हुये थे। उसे बड़ा गुस्सा आया। उसकी मर्जी हुई कि गवर्नर को घोड़े से गिराकर खूब मारे। पर ऐसा करने से उसके लड़के पर आपत्ति आ सकती थी। इसलिए वह लहू का घूँट पीकर रह गया। गवर्नर के सामने उसने झुककर कहा—"मुझे मालूम न था। माफ़ कीजिये। मैंने जान-बूझकर आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया है। मुझे जाने दीजिये।"

गवर्नर को दया न आई। जमा हुये लोगों के मुखों पर उसे क्रोध दिखाई दिया। सब पर दबदबा जमाने के लिए उसने सोचा यह अच्छा मौका था।

गवर्नर के सैनिकों ने लड़के को पकड़कर पेड़ के पास ले जाकर खड़ा कर दिया। जब उन्होंने उसकी आँखों पर पट्टी बाँधनी

चाही, तो उसने कहा—"नहीं! मेरे पिता का बाण मेरा कुछ न बिगाड़ सकेगा। मुझे कोई डर नहीं है।"

टेल भी निश्चित स्थान पर खड़ा किया गया। उसने घुटने टेककर निशाना देखा। बाण उतारकर वह गुनगुनाया—"यह मुझ से न होगा।

गवर्नर ने परिहास करते हुये कहा—"ओह, तुम नहीं कर सकते! तूफ़ान में तुम हत्यारों को झील पार ले जा सकते हो! क्यों! जब तुम हत्यारों की मदद कर सकते हो, तो क्या अपनी मदद नहीं कर सकते!

बाण छोड़ो, नहीं तो अपने और अपने लड़के के प्राण छोड़ो। सोच लो।" गवर्नर ने कहा।

विलियम टेल के मन में जो तूफ़ान चल रहा था, वह यकायक थम-सा गया। उसने अपने और लड़के के बीच का फासला ध्यान से नापा। फिर उसने गवर्नर और अपने बीच का फ़ासला नापा। निश्चित स्थल पर पहुँचकर उसने दो बाण निकाले। एक उसने कमरबन्द में रखा और दूसरा धनुष पर। इतने लोग थे पर सब के सब बिल्कुल चुप थे।

विलियम टेल ने बाण छोड़ा। उसके लड़के के सिर पर जो सेब था, वह दो टुकड़ों में फट गया। लोगों ने हर्ष ध्वनि की। वे भाला लिये उन सैनिकों को धकेलते आगे बढ़े, जिन्होंने विलियम टेल को घेर रखा था।

उनको दूर हटाने के लिए गवर्नर गेस्लर ने अपने सिपाहियों को झिड़का। उसने टेल से पूछा—"तुम्हारा निशाना सचमुच आश्चर्यजनक है। पर तुमने दो बाण क्यों निकाले!"

"यह तीरन्दाज़ों का रिवाज़ है।" टेल ने कहा।

"सच बताओ। मैं तुम्हारा कुछ न बिगाड़ूँगा।" गेस्लर ने कहा।

विलियम टेल जोर से चिल्लाया—"तुम सच चाहते हो, तो सुनो। वह बाण तुम्हारे लिये निकाला था। अगर पहिला बाण सेब को न लगकर मेरे लड़के को लगता, तो दूसरा बाण तुम्हारी छाती के पार चला जाता। कम से कम दूसरा बाण निशाने पर लगता ही।" उसकी आवाज इतनी ऊँची थी कि दिशायें प्रतिध्वनित होती सी लगती थीं।

यह सुन गेस्लर गरमा गया। उसने अपने सैनिकों से कहा—"इस दुष्ट को गिराकर जंजीरों से बाँध दो। इसको ले जाकर अपने किले की काली कोठरी में रखकर उसको खूब तंग करो, मारो, काटो, नोचो...." उसने आज्ञा दी।

गवर्नर की किश्ती घाट पर तैयार थी। उस किश्ती पर सरकारी चिन्ह थे। उसमें किश्ती चलानेवाले सोलह आदमी थे। टेल को जंजीरों से बाँधकर उस किश्ती में डाल दिया गया। गेस्लर की खुशी की हद न थी। एक ऐसा आदमी पकड़ा गया था, जो उसकी बगल में कटार की तरह था।

गवर्नर गेस्लर के चढ़ने के बाद किश्ती चली। झील के चारों ओर के पहाड़ शान्त थे। भीनी-भीनी हवा के कारण छोटी-छोटी लहरें उठ रही थीं। दक्षिण में बादल दिखाई दिये। उस हवा के साथ बारिश भी आ सकती थी। यह चप्पू चलानेवाले आस्ट्रियन न जानते थे।

तूफ़ान आ ही गया। उसकी तेज़ी के कारण चप्पू चलानेवाले डर गये, देखते देखते तूफ़ान और भी बढ़ गया। दो चप्पू लहरों की चोट से टुकड़े-टुकड़े हो गये। पतवारवाला, पतवार न सम्भाल सका। उसने उसे छोड़ दिया। गवर्नर की किश्ती तूफ़ान के लिए कठपुतली-सी हो गई।

गवर्नर गेस्लर को अपने प्राणों पर आशा न रही। तूफ़ान के कारण किश्ती किसी पहाड़ से टकरा सकती थी। पतवार सम्भालनेवाले ने गवर्नर के पास जाकर कहा—"अगर हम जीते जी रहना चाहते हैं तो विलियम टेल की जंजीरें खुलवा दीजिये और उसे पतवार सम्भालने के लिए कहिये। यह काम वह ही कर सकता है। और कोई नहीं कर सकता।"

गवर्नर भी क्या करता! उसने सिर हिलाकर स्वीकृति दे दी।

टेल को छोड़ दिया गया। उसे पतवार के पास बैठा दिया। "तुम जोर से चप्पू चलाओ। बाकी मैं देख लूँगा।" विलियम टेल ने कहा।

चप्पू चलानेवालों का ढाढ़स बढ़ा। टेल के हाथ में पतवार आते ही किश्ती रास्ते पर आई। वह हजार आँखों से चारों ओर देख रहा था। इस झील के किनारे एक जगह दस फीट चट्टान की परत पानी में आई हुई थी।

क्योंकि वह पानी के अन्दर थी इसलिए नये लोगों को उसका पता न लगता था। टेल गवर्नर की किश्ती को उस तरफ़ ले गया। टेल ने देखा कि उसके धनुष को पकड़ा सिपाही उसके पास ही था।

गवर्नर की किश्ती का सामने का भाग पत्थर से जा टकराया। तुरत किश्ती घूमी। पतवारवाला हिस्सा किनारे की तरफ़ आया। उसी समय टेल उस सैनिक पर कूदा। अपने धनुष-बाण लेकर वह पत्थर पर जा कूदा।

गेस्लर ने खड़ा होना चाहा। लहरों ने किश्ती को झकझोरा, वह किश्ती में गिर गया। उसके अंग रक्षकों के भाले फेंकने से पहिले विलियम टेल किनारे की झाड़ियों में गायब हो गया। क्योंकि पतवार पकड़नेवाला कोई न था इसलिए किश्ती लहरों के साथ धके खाने लगी।

इस तरह भागकर विलियम टेल घर न गया। वह पहाड़ी पगडंडियों से बूनन पहुँचा। वहाँ भोजन किया। वहीं उसे गवर्नर के बारे में मालूम हुआ। गवर्नर की किश्ती झील में डूबी न थी। गवर्नर सकुशल बूनन पहुँच गया था। वह वहाँ से अपने किले की ओर जानेवाला था।

विलियम टेल रात-भर पहाड़ों में, जंगलों में चलता रहा, सवेरे वह गवर्नर के किले के रास्ते पर पहुँचा। उस किले तक जाने के लिए सिवाय उसके और कोई रास्ता न था। वह रास्ता एक संकड़ी गहरी घाटी में से जाता था। रास्ते के दोनों तरफ़ बड़े-बड़े पेड़ थे। उन पेड़ों में छुपकर वह गवर्नर के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

काफ़ी देर बाद गवर्नर के लोग उस तरफ़ आये। टेल ने अपने पास बचे बाणों में से एक को लेकर उसपर छोड़ा। वह बाण सीधे जाकर गेस्लर की छाती पर

लगा। गवर्नर अपने घोड़े से गिरकर मर गया। परन्तु मरने से पहिले मारनेवाले को अपनी आँखों देखकर मरा।

गवर्नर के सैनिकों ने विलियम टेल का पीछा किया। एक चट्टान के पीछे छुपकर उसने अपनी जान बचाई। फिर वह अपने घर पहुँचा।

गवर्नर की मृत्यु का समाचार तब तक ऊरी जिला में पहुँच गया था। लोग जत्थे बना-बनाकर गलियों में घूम-फिर रहे थे और अत्याचारी गवर्नर की मृत्यु के बारे में जोर जोर से बातें कर रहे थे।

विलियम टेल को देखते ही लोगों ने उत्साह में अपने स्वतन्त्रता-दाता का जलूस निकालना चाहा, पर उसने उन उत्सवों में हिस्सा न लिया। वह अपनी पत्नी के साथ घर चला गया।

अगले दिन, वह सवेरे शामाय हरिणों को शिकार करने निकल गया, जैसे कुछ हुआ ही न हो। जब उसने पहाड़ से देखा, तो उस जगह जहाँ गवर्नर का किला होना चाहिये था, उसे सिर्फ रोड़े-पत्थर ही दिखाई दिये।

विलियम टेल के साहसिक कार्य के बारे में जानते ही लोगों ने जहाँ-जहाँ गवर्नरों के किले थे, वहाँ वहाँ उन्हें मिट्टी में मिला दिये।

फिर तीन जिलों के लोगों ने मिलकर अपना संविधान तैयार किया। आज भी उस संविधान के अनुसार स्विजरलेन्ड में प्रजातन्त्र चल रहा है। उसके अंकुरित होने का कारण विलियम टेल का बाण था, अब भी वहाँ के लोग यह बताते हैं।

हिमयुग कालीन बालोंवाले गेन्डे, यूरुप के बर्फीले प्रदेश में खुदाई करने पर मिले, अब तक इनके कलेवर बर्फ में सुरक्षित रहे।

ये शाकाहारी थे। इनके दान्तों में पत्तों के टुकड़े मिले। आज के गेन्डों के बाल नहीं होते। परन्तु उस युग के गेन्डों के बाल उनको शायद सरदी से बचाते थे।

इनके नथने पर के सींग बहुत खतरनाक होते हैं। तो भी उस समय के लोग भोजन के लिए इनका शिकार करते थे। अपनी गुफाओं में उन्होंने इनके चित्र भी बनाये।

संसार के आश्चर्य (प्राचीन)
१. "कलोसस"—रोड्स नामक स्थल पर स्थित, हिलियोस (सूर्य) की कांसे की मूर्ति। स्थापना:—२८० ई. पू. ऊँचाई:—१२० फीट.
२. "डायना" मन्दिर—एफिसस में था। क्षेत्र फल ८०,००० वर्ग फीट.
३. अलेक्जान्ड्रिया प्रकाश स्तम्भ, ऊँचाई ४०० फीट—सफेद पत्थरों का बना था। कई मंजिलें थीं। निर्माण, ईसा से पहिले तीसरी शताब्दी में। इसका निर्माता मिश्र का राजा, टोलमी द्वितीय था।
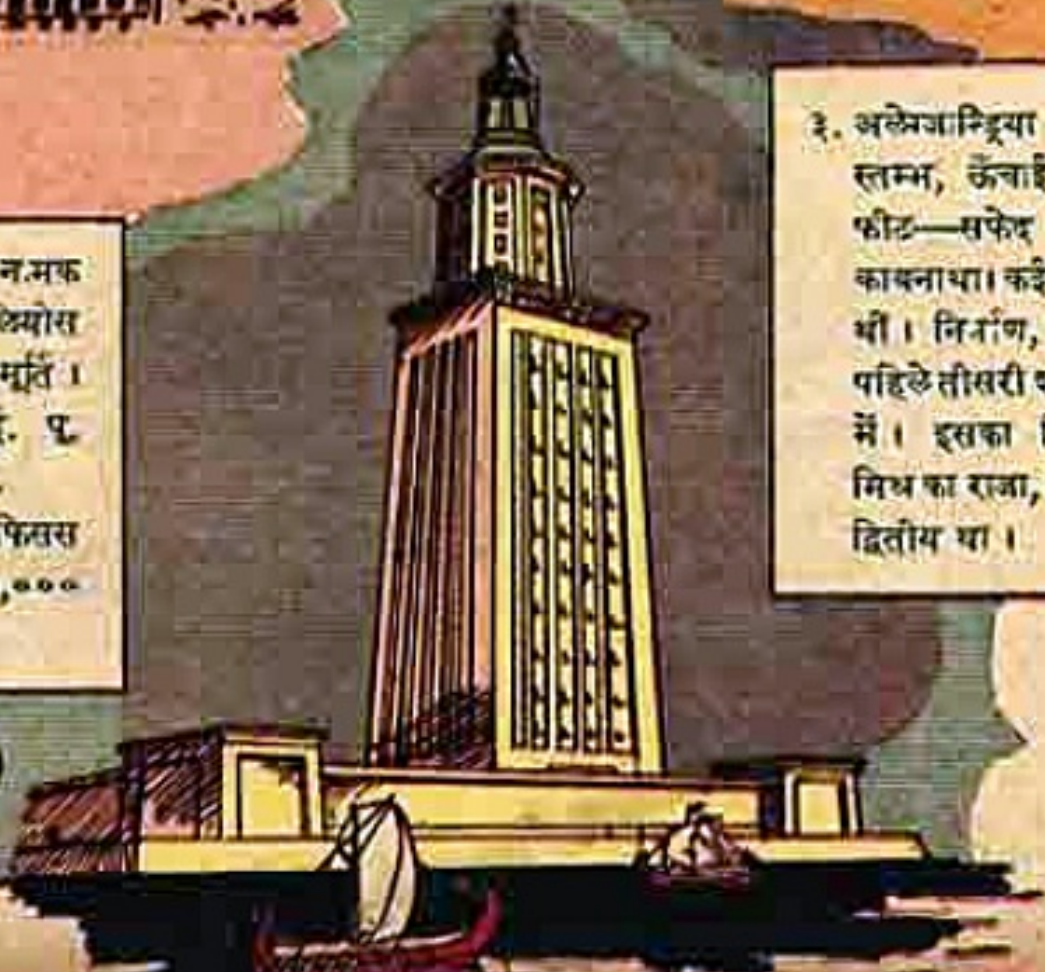
संसार के आश्चर्य (प्राचीन)
4
5
6
7
४. मिस्र के पिरामिड—चियोप्स पिरामिड की ऊँचाई पहिले ४८१ फीट थी। (अब ५५१ फीट है।) ६,६०० साल पहिले, एक लाख गुलामों ने बीस साल में इसे बनाया था।
५. जूपीटर की मूर्ति, फिडियास ने इसको, ओलम्पिया स्थित मन्दिर के लिए बनाया था। यह मूर्ति, अपनी शिल्प-कला के लिए प्रसिद्ध है।
६. बैबिलोन आकाश उद्यान: नेबुकाडनज़ार ने, ७५ फीट ऊँचाई पर, चार एकड़ का बाग बनवाया था।
७. मौसोलस समाधि—१११ फीट परिधि, १४० ऊँचाई। इसको मौसोलस की पत्नी ने ईसा से पूर्व, चौथी शताब्दी में बनवाया था। *
* सिवाय पिरामिड में बाकी सब नष्ट हो चुके हैं।

# १. निर्भय कुत्ता

"बुल डाग" जाति के कुत्ते यह नहीं जानते कि भय किसे कहते हैं। इसका उदाहरण निम्न घटना है।

अमेरिका के ज्योर्जिया प्रान्त में मि. बर्ड फ्रान्कलिन नाम का एक किसान था। उसने "बुल [illegible]" जाति के कुत्ते को पाला। जब फ्रान्[illegible] काम करता, इधर उधर अपने खेतों में घूमता [illegible] कुत्ता भी उसके साथ रहता।

एक दिन फ्रान्कलिन अपने खेत में [illegible] चरा रहा था। आदत के अनुसार कुत्ता भी उसके साथ आ रहा था। पाश्चात्य देश के बैल जब बिदक उठते हैं, तो बहुत खतरनाक हो जाते हैं।

न मालूम क्यों यकायक फ्रान्कलिन का बैल बिदक उठा। उसने गुस्से में अपने मालिक को गिरा दिया। फ्रान्कलिन चोट खाकर जमीन पर जा गिरा तो वह उठ न पाया। इस बीच बैल ने फिर उस पर हमला किया।

इतने में कुत्ता जान गया कि मालिक पर आफ़त आनेवाली थी। उसने अपनी जान के बारे में न सोचा। बैल के मुख पर कूदा...अपने दान्त उसके मुख में गाड़ दिये। कुत्ते ने उसको [illegible]-सा किया।

[illegible] उसको हटाना चाहा पर हटा न सका। [illegible] फ्रान्कलिन लंगड़ाता लंगड़ाता अपने प्राण [illegible] कुत्ते के प्राण बचाने के लिए मदद [illegible] गया।

परन्तु कुत्ते की जान न बच सकी। बैल के जोर के सामने उसकी पकड़ ढीली पड़ गई और वह नीचे गिर गया। तुरत बैल ने उसको अपने पैरों से कुचलकर मार दिया।

हस्पताल में जाने के कारण फ्रान्कलिन के तो सब घाव भर गये। परन्तु अपने पालतू कुत्ते की मृत्यु उसके मन पर एक ऐसा घाव छोड़ गई थी, जो कभी न भर सका।

# विचित्र प्रतीकार

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। शव को उतारकर कन्धे पर डाल पहिले की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, कई में हम जानते हैं, अपार राजभक्ति होती है। ऐसे लोग अपने राजा के लिए प्राण भी न्योछावर कर देते हैं। परन्तु तुम्हारी तरह किसी आदमी के लिए इतनी मेहनत करना मैंने कहीं नहीं देखा। ताकि तुम्हें थकान न हो इसलिए मैं तुम्हें मन्दहास नाम के राजभक्त की कहानी सुनाता हूँ।" उसने यों कहानी सुनानी शुरू की।

किसी जमाने में कैलासवती नगर में मन्दहार नाम का एक उत्तम क्षत्रिय रहा

## बेताल कथाएँ

करता था। वह सम्पन्न था। और उसका स्वभाव गम्भीर था। उसने अपनी बिरादरी की क्षत्रिय कन्या, नीलालक से प्रेम करके विवाह करना चाहा। उसने तरह-तरह से अपना प्रेम प्रदर्शित किया। और यह भी साफ साफ सूचित कर दिया कि वह उसके लिए प्राण तक देने के लिए तैयार था।

परन्तु नीलालक को मन्दहास पर प्रेम न था। वह धृतवर्मा नामक एक सामन्त से प्रेम करती थी। आखिर उसने उससे ही शादी की। कुछ समय बाद उनके एक लड़का भी पैदा हुआ।

नीलालक से उसका विवाह न होना और धृतवर्मा का हो जाना, यह बात मन्दहास के मन में भाले की तरह चुभ रही थी। "जिस दिन मौका मिलेगा, मैं उस दिन इस धृतवर्मा को अपनी तलवार के घाट उतार दूँगा।" मन्दहास ने प्रतिज्ञा की। धृतवर्मा की हत्या ही मानो उसके जीवन का ध्येय हो गया। ऐसा लगता था, जैसे वह इस प्रतिज्ञा को पूरी करने के लिए ही जी रहा हो।

कैलासवती नगर के राजा के परिवार में एक आदमी था। उसने एक बार राजा को मारकर स्वयं राजा बनना चाहा था। परन्तु ऐन मौके पर वह पकड़ा गया और उसको देश से निकाल दिया गया। देश से निकाले जाने के बाद भी उसने अपनी कोशिश न छोड़ी। राजा के सामन्तों को अपनी ओर मिलाकर उनसे विद्रोह करवाया। सामन्तों ने जब विद्रोह किया तो उसने भी कुछ सेना के साथ राज्य पर आक्रमण किया।

इन विद्रोही सामन्तों में धृतवर्मा भी था। यह पता लगते ही मन्दहास अपनी सेना के साथ राजा की तरफ लड़ने गया। मन्दहास का ख्याल था कि कम से कम

धृतवर्मा से मुठभेड़ युद्ध के मैदान में तो हो ही सकेगी।

युद्ध कुछ घंटों में खतम हो गया। विद्रोही पराजित होकर मैदान छोड़कर भाग गये। उनको पकड़ कर उनका सिर काटने के लिए राजा ने अपने पक्ष के सामन्तों को आज्ञा दी। परन्तु राजद्रोहियों का पीछा करनेवाले सचमुच दो ही तीन थे। औरों को यह क्रूरता-सी लगी।

राजद्रोहियों का पीछा करनेवालों में मन्दहास भी था। पराजित हो मैदान छोड़कर भागनेवालों का पीछा करना उसे भी बुरा लगा। परन्तु वह तो केवल धृतवर्मा का ही पीछा कर रहा था। धृतवर्मा युद्ध में बिना उससे मुकाबला किये ही भाग गया था। मन्दहास की प्रतिज्ञा चाहे कुछ भी हो, वह पूरी न हो सकी।

कई विद्रोही पकड़े गये। उनको मृत्यु दण्ड दिया गया। परन्तु धृतवर्मा का कहीं पता न लगा। मन्दहास उसको, उसके देश छोड़ने से पहिले ही पकड़ने की कोशिश कर रहा था।

युद्ध-भूमि से भागकर जाते हुए विद्रोहियों का पता ठिकाना हर किसी से मालूम करते

हुए, एक दिन मन्दहास अपने सैनिकों के साथ अन्धेरा होने के बाद एक ग्राम में रुका। वहाँ उसने एक सराय में रात काटने का प्रबन्ध किया। इतने में सराय में जमा हुए मनुष्यों की बातचीत से पता लगा कि कोई विद्रोही गाँव के नुकड़ में, एक उजड़े घर में रह रहा था।

झट मन्दहास ने सैनिकों को मशाल लेकर साथ आने की आज्ञा दी। वह तुरत वह घर ढूँढ़ने निकल पड़ा। घर आसानी से मिल गया। मन्दहास ने ज़ोर से किवाड़ खटखटाकर पूछा—"कौन है अन्दर!"

एक स्त्री ने किवाड़ खोला। अन्दर कहीं एक दिया टिमटिमा रहा था। मशाल लिये आदमी दूर खड़े थे। इसलिए मन्दहास न जान सका कि किवाड़ खोलनेवाली नीलालक थी। उसका हुलिया भी बिगड़ा हुआ था।

"कौन हैं आप! आपको क्या चाहिए!" उस स्त्री ने पूछा।

"इस घर में कौन है!" मन्दहास ने ऊँची आवाज में पूछा।

"मैं और मेरा लड़का" नीलालक ने धीमे से कहा। वह मन्दहास की आवाज पहिचान कर अपने पति के बारे में डरने लगी थी।

"तो तुम घर छोड़कर चले जाओ, हमें घर जला देना है।" मन्दहास ने कहा। उसका यह कहना था कि सैनिक घर जलाने के लिए मशाल लेकर इधर-उधर दौड़े।
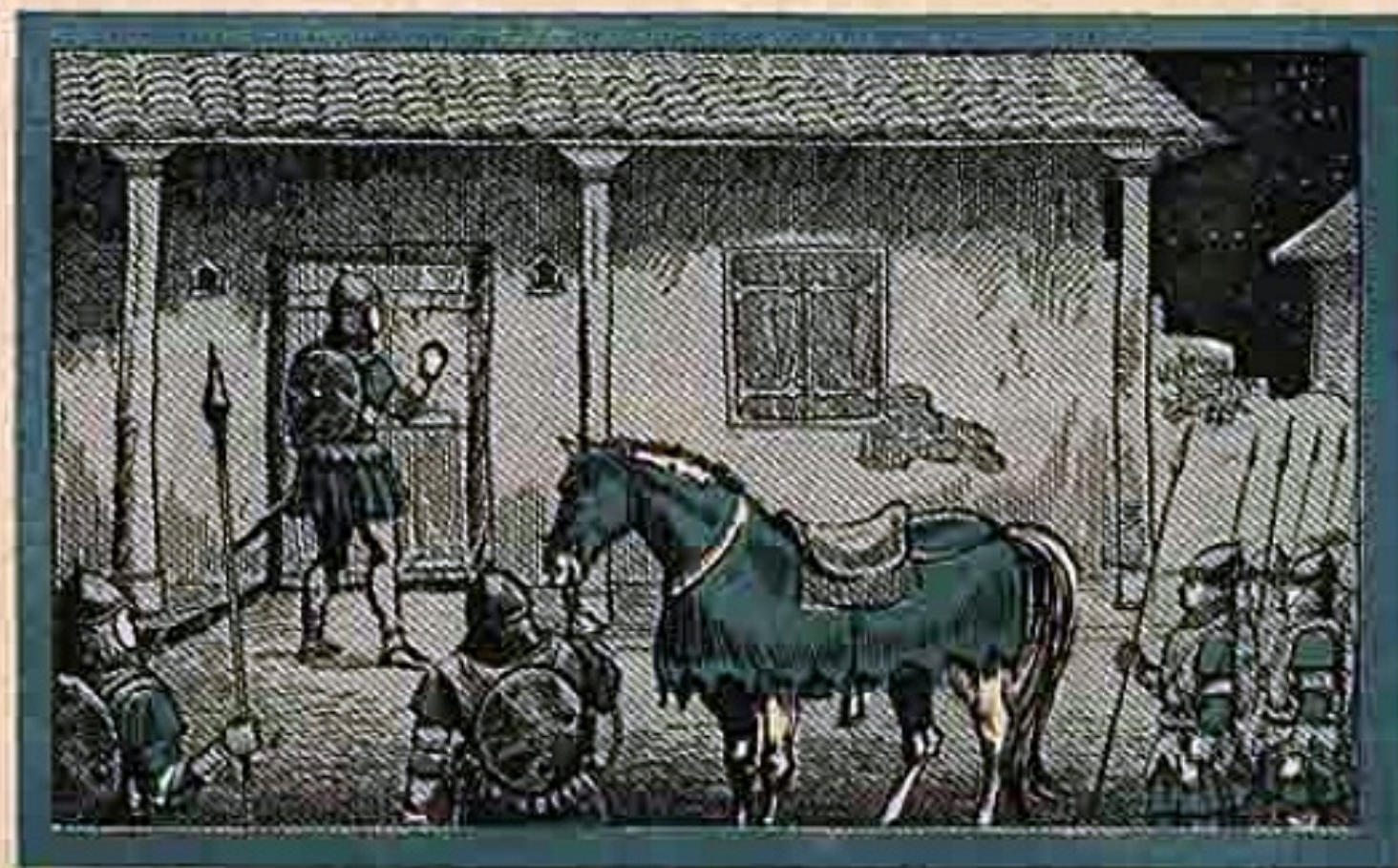
नीलालक भागी-भागी अन्दर गई और अपने सोते लड़के को उठा लाई, तभी घर कहीं कहीं जलने लगा था। उसने बाहर आकर कहा—"मेरे पति घायल अन्दर पड़े हैं। अगर आपने जीते जी उनको जला दिया तो आपको क्या मिलेगा? आप उनसे बदला लेना चाहते हैं? मैंने उनसे प्रेम करके शादी की है। चाहें तो आप मेरे प्राण ले लीजिये। यह मेरा लड़का है। अगर मेरा लिहाज न भी करें, तो न कीजिये, कम से कम इस लड़के का लिहाज करके इसके पिता की रक्षा कीजिये" रोती रोती वह मन्दहास के पैरों पर पड़ गई।

मन्दहास ने नीलालक को पहिचान लिया। उसका मन कलोलित हो उठा। उसने नीलालक के लड़के को उठाकर चूमा और उसको वापिस दे दिया। तालियाँ बजाकर उसने अपने सैनिकों को बुलाकर कहा—"अरे, विद्रोही तो दक्षिण की ओर भाग गया है। तुम उसे पकड़ो, मैं इन्हें किसी के घर रखकर तुम्हारे साथ आ मिलूँगा।"

मन्दहास के सैनिक दक्षिण की ओर गये। फिर मन्दहास जलते घर में घुसा। एक खाट पर असहाय धूतवर्मा पड़ा था। उसको उठाकर वह बाहर लाया। उसे अपने घोड़े पर लिटाकर, स्वयं चलता उत्तर

दिशा की ओर चल पड़ा। नीलालक अपने लड़के को उठाकर उनके साथ-साथ चली।

सवेरा होते-होते वे सीमा पार कर गये। सीमा के पार, एक किसान के घर धृतवर्मा उसकी पत्नी और उसके लड़के की रहने की व्यवस्था करके मन्दहास अपने घोड़े पर, कैलासवती नगर वापिस चला आया। उसने सीधे सेनापति के पास जाकर पूछा—"विद्रोही की रक्षा करनेवाले को क्या सजा मिलनी चाहिए?"

"मरण दण्ड" सेनापति ने कहा।

"तो मुझे मरवा दीजिये। राजा के विद्रोही धृतवर्मा की मैंने रक्षा की और उसको अभी सीमा पार पहुँचा कर आ रहा हूँ।" उसने कहा।

सेनापति ने आश्चर्य से पूछा—"जो किया सो किया, यह किसी से कहने की क्या जरूरत है! तुम से कौन पूछ रहा है!"

मन्दहास को यह सुन तसली न हुई। उसने राजा के पास जाकर कहा—"महाराज! मैंने राजद्रोही धृतवर्मा की रक्षा की है। मुझे दण्ड दीजिये।" उसने कहा।

राजा ने गुस्से में कहा—"तो इस दुष्ट का सिर कटवा दो।" सेनापति ने कहा—"महाराज! जल्दबाजी न कीजिये। हमारे सामन्तों में से कई, कोई न कोई बहाना करके युद्ध में न आये। यह विद्रोहियों से वीरतापूर्वक लड़ा। युद्ध के बाद बीस से अधिक विद्रोहियों को इसने पकड़ा। केवल एक की रक्षा करने के कारण मृत्यु-दण्ड देना उचित नहीं मालूम होता। अपनी गल्ती आप बता देने से तो इसकी राजभक्ति और भी स्पष्ट हो जाती है।"

यह युक्ति राजा को जंची। उसने मन्दहास को बिना दण्ड दिये छोड़ दिया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा— "राजा! मन्दहास का प्रेम अपार था। उसकी राजभक्ति भी अपार थी। इन दोनों की तुलना में, प्रेम की ही विजय हुई, इसलिए ही उसने धूतवर्मा को छोड़ दिया, यह समझा जा सकता है। परन्तु यह करके, अपने प्राण भी देने के लिए तैयार हो गया था, इसलिए मैं सोच नहीं पाता कि उसका प्रेम बड़ा था अथवा उसकी राजभक्ति। अगर तुमने जान बूझकर मेरा सन्देह निवारण न किया तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा—"मन्दहास के प्रेम या राजभक्ति में कोई विशेषता नहीं है। अगर उसने सचमुच नीलालक से प्रेम किया था, तो उसके पति को मार डालने की प्रतिज्ञा न करता। उसकी राजभक्ति भी कुछ ऐसी ही थी। युद्ध भूमि में धूतवर्मा को मारने के लिए ही वह राजा की तरफ से लड़ा था। अगर धूतवर्मा राजा की तरफ होता तो वह विद्रोहियों की तरफ से लड़ता। मन्दहास में आत्माभिमान था। जब नीलालक ने उससे प्रेम न करके धूतवर्मा से प्रेम किया, तो उसके आत्माभिमान को धक्का लगा। इसलिए ही उसने धूतवर्मा को मारने की प्रतिज्ञा की। क्योंकि वह नीलालक की दृष्टि में नीचा नहीं होना चाहता था, इसलिए ही उसने धूतवर्मा की रक्षा की। क्योंकि उसके आहत आत्माभिमान की ठीक प्रतिक्रिया न हुई थी, इसलिए उसने स्वयं बलि हो जाना चाहा।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

## जानते हो ?

★ अमेरिका में कोयले के इन्जिन नहीं हैं। अब रूस में भी इस तरह के इन्जिनों का निर्माण समाप्त कर दिया गया है। उनकी जगह डीज़ल तेल और बिजली से चलनेवाले इन्जिन बनाये जा रहे हैं।

★ "क्षण" की क्या परिभाषा है, इसकी अवधि निश्चित करना असम्भव है। रजत पट पर एक सेकन्ड में बीस स्टिल चित्र दिखाये जाते हैं। परन्तु हमारी आँखें "चलते" चित्रों को देखती हैं। एक सेकन्ड के ३०० अंश में, होनेवाली घटनाओं की फोटो ले सकनेवाले केमरे बाजार में बिक रहे हैं। टेनिस में किये जानेवाले "सर्विस" आदि भी यह केमरा "देख" सकता है। एक सेकन्ड के दस हजार से, दस लाख अंशों में, होनेवाली घटनाओं की फोटो लेनेवाले विशेष केमरों से पक्षियों के उड़ते समय, बल्ब के जलते समय, पानी गिरते समय, क्या होता है, देखा जा सकता है। इस समय रूस की एक प्रदर्शनी में एक ऐसा केमरा दिखाया जा रहा है, जो सेकन्ड में ३,२०,००,००० दृश्य "देख" सकता है।

★ आजकल रूस और अमेरिका जो कृत्रिम उपग्रह छोड़ रहे हैं, अगर उनमें टेलिविजन रिले यन्त्र रखे गये तो उनकी सहायता से भूमि पर रहनेवालों को टेलिविजन के कार्यक्रम देखने की सुविधा मिल सकेगी। इस समग ऐसी सुविधा नहीं है।

★ कुछ दिन पहिले, इटली के एक कोयले की खान में, ६०० फीट नीचे मानव का एक अस्थि पंजर, फोसिल रूप में मिला। विशेषज्ञों का कहना है कि यह करोड़ वर्ष पहिले का मानव अस्थि पंजर है। यह अस्थि पंजर सूचित करता है कि मनुष्य वनमानसों का परिणमित रूप नहीं है। परन्तु वनमानस और मनुष्य दोनों छः या सात करोड़ पहिले जीनेवाले किसी प्राणी से पैदा हुए हैं। इस अस्थि पंजर कि ऊँचाई चार फीट है, यह उस समय का अस्थि पंजर है जब मनुष्य, मनुष्य के रूप में आने लगा था।

# हिम पुरुष - यति

हिमालय पर्वतों में मनुष्य की तरह का एक पशु है। इसको वहाँ के लोग, यति, मेति, शुक्पा, मिगो, कॉम्मी...आदि नाम से जानते हैं। परन्तु बहुत समय तक पाश्चात्य वैज्ञानिक विश्वास न कर पाते थे कि ऐसा भी कोई पशु था। परन्तु हिमालय के लोग अनादि काल से जानते हैं कि ऐसा एक पशु है।

"यति" के बारे में पहिले पहल जाननेवाला, पाश्चात्य पुरुष, कर्नल वाडेल नाम का ब्रिटिश पर्वतारोही था। १८८७ में इसने सिक्कम में सोलह हज़ार फीट ऊँची हिम भूमि पर चलते हुए कुछ पदचिन्ह देखे। वे पदचिन्ह मनुष्य के पदचिन्हों के भाँति थे। पर कुछ बड़े थे। किसी आदमी का बिना जूते-चप्पल का नंगे पैर उस बर्फ पर चलना देख वाडेल को अत्यन्त आश्चर्य हुआ। उसने इस बारे में लिखा भी। पर किसी ने कोई दिलचस्पी न दिखाई।

१९०६ में हेनरी एल्विस नाम के एक व्यक्ति ने "यति" के पदचिन्ह ही न देखे, अपितु उसको भागता भी अपनी आँखों देखा। "यति" के सारे शरीर पर बाल थे। इसने अपना अनुभव कुछ मित्रों से ही कहा। १९२१ में एवरेस्ट के आरोहण का प्रथम प्रयत्न लेफ्टिनेन्ट कर्नल सी. के. हावर्ड-ब्यूरी ने किया। उसने एक पर्वत की चोटी से देखा कि कोई, जो मनुष्य की तरह था, जिसके शरीर पर बाल थे, आराम से दो पैरों पर चला आ रहा था। उसके साथ के शेर्पा कुलियों ने बताया कि वह यति था। कभी कभी वह जंगली भेड़ों को और उनको चरानेवालों को भी मार देता था। शेर्पा "यति" को कॉम्मी कहते हैं।

ज्यों ज्यों हिमालय पर्वतारोहियों की संख्या बढ़ती गई, त्यों त्यों पाश्चात्य लोगों के पास "यति" के बारे में सामग्री भी बढ़ती गई। कई ने कपोल कल्पित कहानियाँ ज़रूर कहीं पर दर्जनों पर्वतारोहियों के अनुभव को अस्वीकृत करना संसार के लिए सम्भव न था। उनमें से कुछ ये हैं:—

१९२२ में कई ब्रिटिश सेनाधिकारियों ने सिक्कम में कई "यतियों" को एक साथ देखा। वे मनुष्यों

की तरह भागते भागते एक जंगल में चले गये। अगले दिन सबेरे जब आकर उन्होंने देखा, तो बर्फ पर उनको मनुष्यों के पदचिन्ह-से दिखाई दिये।

नेपाल के एक प्रान्त में, १९२६ में सोलह हज़ार फीट की ऊँचाई पर, रोनाल्ड काल्बक नाम के ब्रिटिश वनस्पतिशास्त्रज्ञ को इस तरह के पदचिन्ह दिखाई दिये। उसके अगले वर्ष नेपाल में, एक घाटी के उत्तर में फ्रेन्क स्मिथ नाम का व्यक्ति "यति" के पदचिन्हों को देखता देखता कुछ दूर भी गया। करीब करीब इसी समय में केप्टेन (अब सर) जोन हन्ट ने सिक्किम में, एक घाटी में "यति" के दो पदचिन्हों को देखा (एवरेस्ट पर जिस दल ने विजय पाई थी उसके नेता जोन हन्ट ही थे।)

१९४८ में दो नोर्वेजियन "यति" के पदचिन्हों को देखते देखते जब गये, तो उन्होंने दो यति देखे। उनके शरीर पर बाल थे। उन्होंने एक "यति" को पकड़ना चाहा, पर उनको उनमें से एक ने हाथ पर मारा। जब दूसरे ने "यति" को बन्दूक दिखाई, तो वह भाग गया।

१९५१, तक "यति" के बारे में कहानियाँ केवल सुनने में ही आईं, पर उस साल एरिक शिप्टन ने "यति" के पदचिन्हों का फोटोग्राफ भी लिया। उसने यह निरूपित किया कि "यति" द्विपद हैं। जब वे खन्दक को पार करते हैं, तो परली तरफ एक पैर रखते हैं। जो चतुष्पदों के लिए सम्भव नहीं है। शिप्टन के फोटोग्राफों से यह सिद्ध हो गया कि "यति" मनुष्य की तरह तो हैं, पर वह साधारण मनुष्य नहीं हैं।

इसके बाद "यति" के पद चिन्हों को जिन्होंने देखा, उनमें एडमन्ड हिलरी भी हैं, जो एवरेस्ट की चोटी पर गये थे। "यति" के कई पद चिन्ह ऐसे भी हैं जो तेरह अंगुल बड़े हैं। हिमालय में कई ऐसे हैं, जिन्होंने यति को देखा है। जब उनको गोरिल्ला का चित्र, ऊरान्गुटान का चित्र, प्राचीन मानव का चित्र दिखाया गया, तो उनमें से हरेक ने बताया कि "यति" गोरिल्ला से मिलता जुलता था। नेपाल में कई ग्रामवासियों ने बताया कि "यति" मनुष्यों को चट्टानों पर पीटता था।

इस यति के बारे में जो मनुष्य, और वानरों के बीच का प्राणी मालूम होता है, वैज्ञानिक शोध कर रहे हैं। इस शोध कार्य में, रूसी, ब्रिटिश, अमेरिकन, स्विज़लेन्ड आदि देशों के लोग हैं।

# अन्टार्कटिक की यात्रा

यह हम पहिले ही बता चुके हैं कि जहाँ दक्षिण ध्रुव है, वहाँ एक महाद्वीप है और उसका नाम अन्टार्कटिका है। उस महाद्वीप पर वायुयान में उड़नेवाले, बर्ड आदि और वहाँ दीर्घ रात्रि बितानेवाले, डाक्टर सिपिल के विषय में भी हम पहिले बता चुके हैं। इस बार और साहसपूर्ण कार्य के बारे में हम बतायेंगे।

ब्रिटिश अन्वेषक, डाक्टर विलयन फ़ूक्स के नेतृत्व में कोमनवेल्थ के एक दल ने, १९५७ के अन्त में अन्टार्कटिक प्रान्त को एक सिर से दूसरे सिरे तक भूमि के मार्ग से पार किया। ये वेड्डेल समुद्र के किनारे स्थित शाकिल्टन से २४ नवम्बर, १९५७ को निकले। २० जनवरी, १९५८ को दक्षिण ध्रुव में पहुँचे। फिर वहाँ से चलकर रास समुद्र के मेकमार्डो तट पर स्थित स्काट शिविर पर, २ मार्च को पहुँचे। (वे जिस रास्ते से गये उसका नक्शा ऊपर दिया गया है।) इस यात्रा में कई वैज्ञानिक अन्वेषण भी किये गये। इस कार्य को सफलता पूर्वक करने के कारण विलियन फ़ूक्स को "सर" की उपाधि भी दी गई।

डाक्टर फ़ूक्स, भूतत्वशास्त्र वेत्ता हैं। वे पहिले अफ्रिका, उत्तर, व दक्षिण ध्रुवों में ही पर्यटन कर चुके थे। दक्षिण ध्रुव में से होते हुए अन्टार्कटिका को एक सिर से दूसरे सिरे तक जाने की अभिलाषा उनको १९५० में हुई, जब वे अन्टार्कटिक में पर्यटन कर रहे थे। परन्तु तुरत उनकी अभिलाषा पूरी न हो सकी।

१९५२ में, उनसे इसके बारे में एक योजना तैयार करने के लिए कहा गया। उन्होंने इस प्रकार की योजना बनाई, "इस महीने वेडेल समुद्र से मेकमार्डो तट तक पहुँचना होगा। इसके लिए ट्रेक्टरों का उपयोग करना होगा। यात्रा में कुत्ते और वायुयानों की सहायता लेनी होगी। अगर ध्रुव के पार जगह-जगह रास्ते में, वायुयानों द्वारा रसद व पेट्रोल रख दिया गया, तो इनको साथ लेकर जाने का कष्ट बचेगा। वेडेल समुद्र के तट से कुछ दूर, एक शिविर बनाना होगा, सरदियों में वहाँ आदमियों को रखना होगा। वे वातावरण व बर्फ आदि के बारे में अध्ययन करेंगे। यात्रा के लिए आवश्यक वस्तुयें यहीं से ले जानी होंगी। रास्ते में बर्फ-की परत कितनी मोटी होगी, उसका यात्रा में अध्ययन करना होगा।

योजना तैयार हो गई। अब धन की आवश्यकता थी। धन भी मिल गया। ब्रिटेन, न्यूज़ीलेन्ड, दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया की सरकारों ने, अनेक संस्थाओं व साधारण जनता ने भी धन की सहायता दी। न्यूज़ीलेन्ड सरकार ने एक और विशेष काम

किया, वह यह कि मेकमार्डो तट से दक्षिण ध्रुव के मार्ग में, जगह जगह रसद व अन्य चीजों का प्रबन्ध करने के लिए एडमन्ड हिलरी को नियुक्त किया। स्मरण रहे टेन्सिन्ग के साथ एवरेस्ट के चोटी पर चढ़ने के बाद इनको अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिली थी।

१९५५ के नवम्बर में फूक्स का दल जहाज़ में वेडेल समुद्र के तट पर पहुँचा। ३० जनवरी, १९५६ को, जहाज ने वासेल खाड़ी में लंगर डाला। तट से एक मील की दूरी पर उन्होंने एक शिविर बनाया, जिसका नाम उन्होंने शाकिल्टन
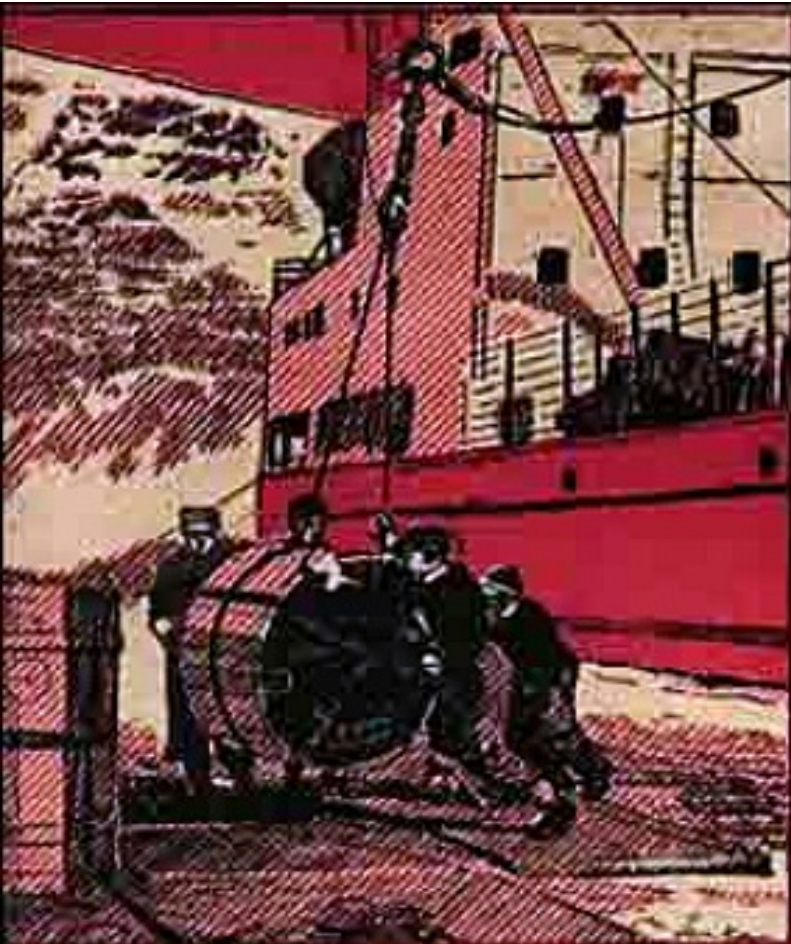
रखा। (क्योंकि १९१४ में एर्नेस्ट शाकिल्टन इनकी तरह, महाद्वीप पार करने निकला था।)

अब इस दल में आठ आदमी थे। सर्दियाँ यहाँ बिताने के लिए इनको यहाँ कुटीर बनाने थे। समुद्र कभी भी जमकर बर्फ हो सकता था। अगर यह हो गया, जो जहाज उन्हें लाया था, वह वापिस नहीं जा सकता था। इसलिए उसे भेज दिया गया। उस जहाज में, एक ट्रैक्टर (बर्फ की बिल्ली) एक बड़े सन्दूक में लाया गया था। वह २० फीट लम्बा, ९ फीट चौड़ा और आठ फीट ऊँचा था। कुटीर तैयार होने से पहिले उसी में आश्रय लेने का निश्चय किया गया। परन्तु बर्फीले तूफानों के कारण कुटीर बनाये ही न जा सके। इसलिए वे आठों आदमी सरदी के छः महीनों सोने के लिए तम्बुओं का उपयोग करते और बाकी समय वे सन्दूक में ही काट देते। (शाकिल्टन शिबिर, दक्षिण ध्रुव से ९०० मील की दूरी पर है, इसलिए यहाँ छः महीने की दीर्घ रात्रि नहीं होती।)

शरत काल की समाप्ति पर वसन्त के आते ही, इन्होंने कुटीर बनाये और इधर उधर खोजने निकले कि किस रास्ते से ध्रुव की ओर जाया जाये। इस बीच, एक और जहाज कुछ और आदमी, ट्रैक्टर, रसद वगैरह लाये—यानि ये सब एक और शरतकाल यहाँ बितायेंगे और यात्रा के लिए आवश्यक प्रबन्ध करेंगे।

वैज्ञानिक परिशोधन के लिए, यात्रा के लिए आवश्यक सामग्री संचित करने के लिए तट से ३०० मील दूरी पर, एक बड़े शिबिर का निर्माण किया गया। वायुयानों की सहायता से यह काम बहुत जल्दी हो

गया। इस शिविर का नाम "साउथ आइस" (दक्षिण की बर्फ) रखा गया। यहाँ वायुयान कई बार आये। इस तरह प्रान्त का अन्वेषण करके, कई स्थलों के नाम भी रखे गये।

तट के पहाड़ों में कोयला दिखाई दिया। वहाँ के पत्थरों में पुरातन वनस्पितियों के "फोसिल" दिखाई दिये। (२० करोड़ वर्ष पहिले इस प्रान्त में वे वृक्ष थे, जो आज कल भूमध्य रेखा के प्रान्तों में पाये जाते हैं।)

वह जहाज़ जो दूसरी बार मनुष्यों को लाया था, वापिस चला गया। अब उनके लिए कोई भी जहाज़ न आता। निर्जन अन्टार्कटिका महाद्वीप में अब उनको अपने पैरों पर ही खड़ा होना था। उनके लिये अब एक ही मार्ग रह गया और वह था, दो हजार मील के बर्फीले रेगिस्तान को पार करके रास समुद्र तक पहुँचना।

अब शाकिल्टन शिविर में सोलह आदमी थे। परन्तु काम बहुत था। एक और शरतकाल खतम हो गया। १९५९ के अगस्त के अन्त में, फिर सूर्य के दर्शन हुए। दक्षिण ध्रुव में रहनेवालों को एक और मास बाद सूर्य दिखाई देता।
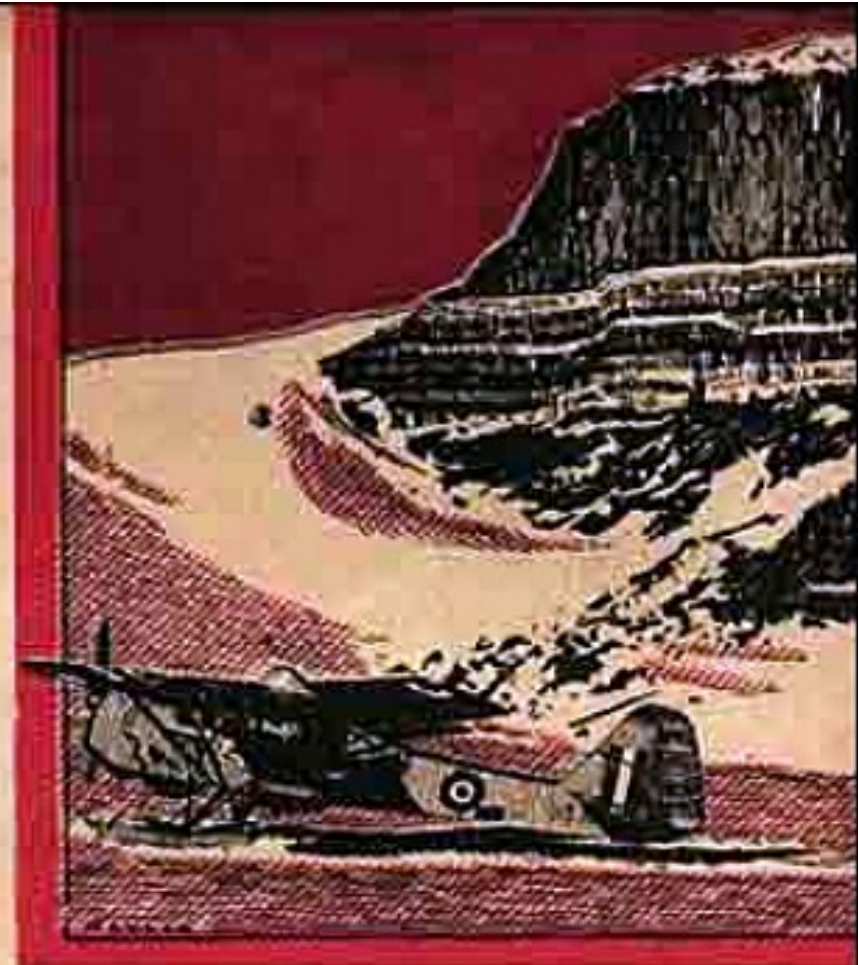
फूक्स का दल, ४, ओक्टोबर को साउथ आइस से मार्ग का अन्वेषण करने निकला। परन्तु कुछ मनुष्यों और कुत्तों को वायुयानों द्वारा पहिले ही शाकिल्टन के पर्वतों में उतार दिया गया था। शाकिल्टन से निकलनेवालों में, फूक्स के अतिरिक्त तीन और थे। उनके साथ तीन "डीजल" "ट्रैक्टर" और एक "बर्फ की बिल्ली" ट्रैक्टर थे।

इनका रास्ता बहुत खतरनाक था। क्योंकि वहाँ की भूमि में बड़ी-बड़ी, और

गहरी गहरी दरारें थीं। उनके ऊपर बर्फ ढका हुआ था।

अगर बर्फ मोटा और पका होता तो ट्रेक्टर उन बर्फ के "पुलों" पर से जा सकते थे। क्योंकि सूर्योदय हो चुका था इसलिए ये "पुल" कमजोर होकर ढह जाने के लिए तैयार थे। भूमि में से गम्भीर भयंकर ध्वनि आ रही थी, जैसे कोई कारखाना चल रहा हो।

इस परिस्थिति में बर्फ के टूटने पर, ट्रेक्टर नीचे गिर सकते थे। इसलिए वाहनों को रस्सियों से बाँधा गया। जब कभी जरूरत होती, लोग उतर जाते और छः फीट, अल्यूमुनियम के सीखचों को बर्फ में घुसेड़ कर देखते। अगर बर्फ उतनी मोटी हो तो उसके नीचे, अगर कोई खन्दक भी हो तो कोई खतरा न था। वाहन आराम से आ सकते थे।

रास्ते में दरारें या खन्दक हैं कि नहीं यह जानने के लिए वे बर्फ को ठोक पीट कर देखा करते। अगर बर्फ की कुछ "खाली" सी आवाज होती तो इसका मतलब यह था कि नीचे कोई गढ़ा था। वे उसमें सिर के बराबर छेद करते, और उन छेदों में से देखते कि गढ़ा कितना बड़ा और किस ओर गया था।

इतनी सावधानी के बावजूद वायुयानों के आवश्यक सहायता होने पर भी, "साउथ आइस" तक दो ही वाहन पहुँच सके। वहाँ पहुँचने के लिए २७ दिन लगे, और उनको चार सौ मील तय करना पड़ा। परन्तु वे ढाई घंटे में वायुयान में अपने शिविर में वापिस पहुँच सकते थे। (अभी है)

# अहिंसा ज्योति

[१०]

शीघ्र ही विशाख का अपने ससुर से झगड़ा हुआ।

मिगार, निघंट नामक तीर्थक स्वामी का शिष्य था। उसने एक दिन अपनी बहू से कहा—"चलो, पूजा के लिए चलें।" विशाख ने अच्छे अच्छे कपड़े पहिने, गहने पहिने और वह ससुर के साथ चल दी। परन्तु यह जानते ही कि वे दिगम्बर स्वामी की पूजा करने जा रहे थे, उसे बहुत बुरा लगा। "मुझे आप ऐसी जगह क्यों लाये?" उसने पूछा।

तीर्थक को गुस्सा आया—"देखा, तुम अपने लड़के के लिए कैसी पत्नी लाये हो! यह बुद्ध की अनुयायी तेरे कुटुम्ब का सर्वनाश करके रहेगी। इसे तुरत भिजवा दो।" उसने कहा।

"वह छोटी बच्ची है। उसे कुछ नहीं मालूम। क्षमा कीजिये।" मिगार ने तीर्थक से निवेदन किया।

एक बार मिगार के घर भिक्षापात्र लेकर एक अर्हत आया। विशाख ने उससे कहा—"इस घर का मालिक जूठन खाता है, आप
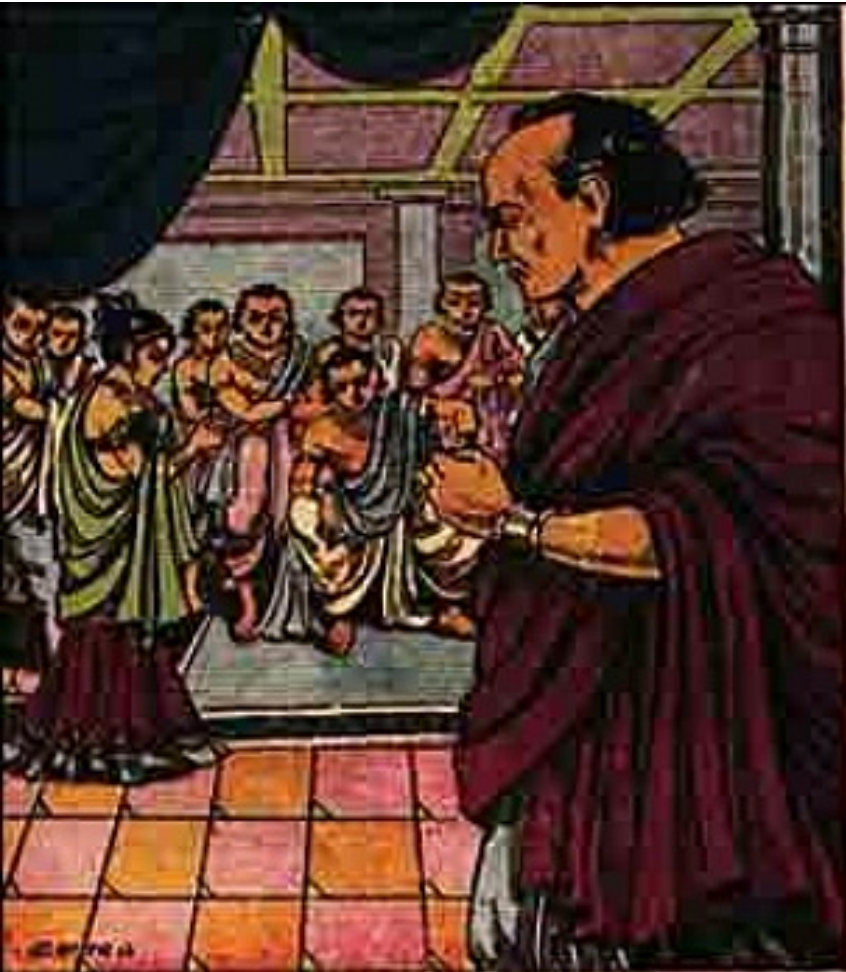
किसी और घर में माँगिये।" यह मिगार ने सुना। उसने गुस्से में अपनी बहू से कहा—"तुम हमारे घर से चली जाओ।"

"जब जाने के लिए कहो तो जानेवाली, आने के लिए कहो तो आनेवाली मैं आपकी कोई दासी नहीं हूँ। मेरे साथ मेरे पिता ने आठ रक्षकों को भेजा था। उनको बुलवाइये।" विशाख ने कहा।

रक्षक आये। मिगार ने उनसे कहा—"मेरी बहू ने मेरा अपमान किया है।"

"मैने कहा था कि मेरे ससुर जूठन खाते हैं, मेरा मतलब यह था कि जन्म परम्परा में किये गये कर्म को वे भोग रहे हैं।" विशाख ने कहा।

यह सुन मिगार का गुस्सा ठंडा हुआ। उसको तसल्ली हुई।

"अच्छा, मेरे दास दासियों को बुलवाइये। मैं इस घर में नहीं रहना चाहती। चली जाऊँगी।" विशाख ने कहा।

"यह क्या! जाओ मत। हमारे घर ही रहो।" मिगार ने बहू को मनाने का प्रयत्न किया।

"आप नास्तिक हैं। मैं बुद्ध की शिष्या हूँ। यदि मुझे बुद्ध के उपदेश सुनने का अधिकार दिया गया तो मैं इस घर में रहूँगी।" विशाख ने कहा।

मिगार इसके लिए मान गया। इसके कुछ दिनों बाद विशाख ने बुद्ध और उनके अनुचरों को अपने घर भिक्षा के लिए बुलाया। यह बात तीर्थक को मालूम हुई। उसको डर लगा कि यदि उसने बुद्ध के एक बार दर्शन कर लिये, तो वह उसकी ओर न देखेगा। उसने मिगार से कहा—"जब बुद्ध तुम्हारे घर भोजन के लिए आये तो तुम घर में न रहकर कहीं चले जाना।"

"मैं आपकी बात न मानूँगा। मेरी बहू विशाख बहुत समझदार है। मैं उसके कहे पर ही चलूँगा।" मिगार ने कहा।

"तुम में थोड़ी-सी भी अक्ल नहीं है। अगर तुमने बुद्ध को देखा तो नरक जाओगे। चाहो, तो तुम उसके उपदेश सुनो। पर देखना मत। आँखों पर पट्टी बाँध लो।" तीर्थक ने कहा।

उनकी सलाह के अनुसार जब मिगार बहू के साथ बुद्ध के दर्शनार्थ गया, तो उसने आँखों पर पट्टी बाँध ली। पर बुद्ध की बातें सुनते सुनते उसे इस प्रकार का आनन्द हुआ कि उसने आँखों की पट्टी उतार फेंकी और बुद्ध के दिव्य रूप को देखा। उसने विशाख की ओर मुड़कर कहा—"माँ, अब से मुझे तुम अपने पुत्र की तरह देखना, मेरी रक्षा करना।" उसने बुद्ध के पास जाकर कहा—"स्वामी, आप ही मेरे एक मात्र शरण हैं। मैं अपनी चालीस करोड़ की सम्पत्ति आपकी सेवा में लगा दूँगा। बुद्ध को समर्पित कोई भी वस्तु व्यर्थ नहीं जाती।"
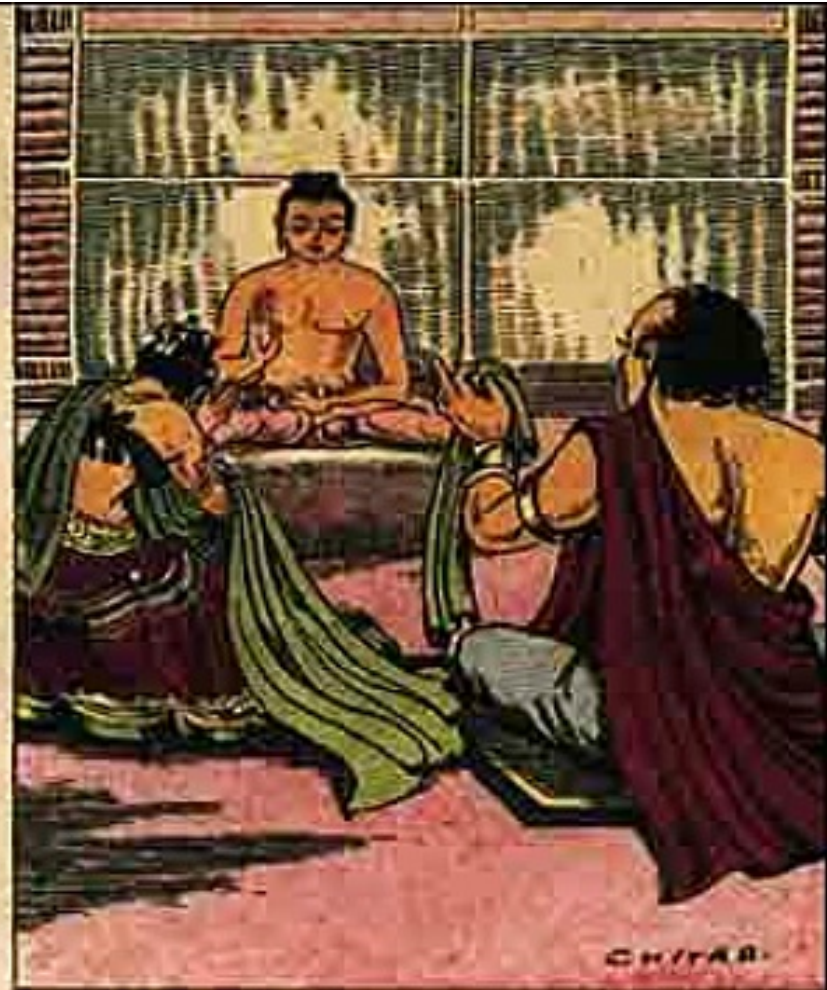
उसके बाद मिगार के घर सिवाय बौद्धावलम्बियों के किसी और के लिए स्थान न था। क्योंकि विशाख ने मिगार की बुद्धि बदल दी थी, इसलिए लोग उसको "मिगार माता" कहने लगे। बुद्ध की शिष्याओं में वह सबसे बड़ी माने जाने लगी।

विशाख रोज तीन बार विहार जाया करती। सवेरे भोजन वगैरह ले जाती। सायंकाल फूल और दीप ले जाती। बुद्ध का नियम था कि स्त्रियों को वर नहीं दिये जाने चाहिए। फिर भी बौद्ध धर्म की वृद्धि के लिए उन्होंने विशाख की इच्छाओं का समर्थन किया। उसने उनसे आठ वर माँगे। वे यों थे बुद्ध के पास

आनेवाले दर्शनार्थियों को उनके घर भेजना, उसके जीवन पर्यन्त पाँच सौ भिक्खुओं का उसके घर भोजन करना, रोगियों की उसके द्वारा सहायता किया जाना। प्रति वर्ष पाँच सौ भिक्खुओं को उनके लिए आवश्यक वस्त्रादि वस्तुओं का देना, आदि।

बीस वर्षों में विशाख के बीस बच्चे हुये। उनमें दस लड़के और दस लड़कियाँ थीं। इतनी सन्तान के होने पर भी उसका स्वास्थ्य ठीक था। जब श्रावस्ती राजा को बताया गया कि उसमें पाँच हाथियों का बल था, तो उसने विश्वास न किया। एक बार उसके सामने से आते हुए उसने अपना हाथी उस पर चढ़ा दिया मगर जब विशाख ने उसकी सूँड़ पकड़ कर मरोड़ी तो वह दर्द से चिल्लाता चला गया।

कुछ समय बाद विशाख ने अपने पिता के दिये हुए गहनों को बेचकर विहार बनाने का निश्चय किया।

परन्तु उन गहनों को खरीद सकनेवाला रईस श्रावस्ती में कोई न था। फिर भी उसने नगर के पूर्व में एक बाग खरीदा। और बहुत-सा धन लगाकर वहाँ विहार बनवाया। क्योंकि वह पूर्व में था, इसलिए उसका नाम पूर्वाराम रखा गया। इस विहार के समर्पण के अवसर पर बुद्ध ने कहा—"आज विशाख के पास जो सम्पत्ति है, बल है, सौभाग्य है, वह उसके पूर्व जन्मों के सत्कार्यों का फल है।"

* * *

शुद्धोधन का एक भाई था, जिसका नाम अमितोदन था। उसके महानम और अनुरुद्ध नाम के दो लड़के थे। रोहिणी नाम की लड़की थी। अनुरुद्ध को लौकिक ज्ञान बिल्कुल न था।

जब वह सात वर्ष का था तो दो राजकुमारों से उसने कोई खेल खेला। उस खेल में हारनेवाले को दूसरों को चावल की रोटी देनी थी। पहिले खेल में अनुरुद्ध हार गया। उसने अपनी माँ को खबर भिजवाकर बाकी दोनों को चावल की रोटी दिलवाई। फिर खेल खेला गया, फिर अनुरुद्ध हार गया। इस तरह वह तीन बार हारा। और तीनों बार उसने माँ के यहाँ से रोटियाँ मँगवाकर उनको दीं, जब उसका लड़का चौथे खेल में भी हार गया, और उसने रोटी के लिए खबर भेजी, तो माँ ने नौकर से कहा—"कहो कि अब नहीं है।" ताकि वह यह समझ सके, उसने साथ एक खाली गिन्नी भी भेज दी।

जाने कहाँ से उस गिन्नी में एक रोटी आ गई, न मालूम उसको किसने वहाँ रखा था। नौकर ने वह गिन्नी अनुरुद्ध को देते हुए कहा—"अब नहीं है!" अनुरुद्ध ने गिन्नी का ढक्कन उठाकर देखा तो उसमें उसने एक नये रंग की रोटी देखी। क्योंकि लौकिक ज्ञान न था, इसलिए उसने सोचा कि शायद उस रोटी का नाम ही "अब नहीं है।" जब रोटी खाई तो वह चावल की रोटी से बहुत अधिक स्वादिष्ट थी।

अनुरुद्ध ने जाकर माँ से कहा—"माँ, तुमने कभी मुझे....." "अब नहीं है" रोटी नहीं दी। माँ को अचरज हुआ। अनुरुद्ध को लौकिक ज्ञान न था, यह उसका एक उदाहरण है। वह इसी तरह बड़ा हुआ।

अनुरुद्ध के साथी, नौकर वगैरह भी, मालूम होता है, इसी तरह बड़े हुए। जब उसकी आयु पन्द्रह वर्ष की थी तो उसमें, भद्री और किम्बिल में वाद-विवाद हुआ। चावल किसमें से निकलते हैं!

"थाली में से।" किम्बिल ने कहा। उसका मतलब चावल को धोनेवाले बर्तन से था।

"नहीं, वह सोने के थाल में से निकलता है।" अनुरुद्ध ने कहा। उसका मतलब चावल परोसे जानेवाले सोने के थाल से था।

अनुरुद्ध जब इस नादान अवस्था में था, तो बुद्ध ने खबर भेजी कि प्रति शाक्य कुटुम्ब से उनके पास एक एक को भेजा जाये।

अमितोदन के कुटुम्ब में से या तो महानम को जाना था नहीं तो अनुरुद्ध को। महानम सन्यासी न होना चाहता था। वह राज्य के सुख भोगना चाहता था। यही नहीं अनुरुद्ध जैसा भोंदू राज्य-कार्य के योग्य भी न था। इसलिए महानम ने अनुरुद्ध को सन्यासी होने के लिए प्रेरित किया। "चावल कहाँ से निकलता है?"—वाद-विवाद ने उसको यह करने का अवसर दिया।

महानम ने अनुरुद्ध से कहा—"तुम इतना भी नहीं जानते कि चावल कहाँ से आता है! किसान ज़मीन जोत कर उसे पैदा करते हैं। खेती करने के लिए हल, फावड़ा, खुरपे आदि अट्ठारह उपकरण चाहिए। खेतों में नालियाँ बनानी होती हैं, मुँडेरे बनानी होती हैं। खाद डालना होता है, फिर अंकुर बनाये जाते हैं। उन्हे बोया जाता है। उनकी निलाई करनी होती है। कहीं चूहे, सूअर आदि फसल न खा जायें—इसलिए उनकी रक्षा करनी होती है। मचान में बैठकर पक्षियों को भगाना होता है। यह नौ महीनों का काम है और जब फसल कट जाती है तो मजदूर, नाई, धोबी वगैरह को देना होता है, जो कुछ बचता है, उससे पुराना ऋण चुकाना होता है। बीज के लिए कुछ रखना होता है। जो कुछ बच रहा

उसे खाया जाता है। फिर दुबारा फसल आने तक उसी से गुजारा करना होता है।

"तो चावल के निकालने के लिए इतनी मेहनत करनी होती है!" अनुरुद्ध ने पूछा।

"सिर्फ यही न! कभी कभी मजदूर बीमार पड़ जाते हैं। अगर मौसम ठीक न रहा तो फसल खराब हो जाती है। खेती करनेवाले को किसी भी प्रकार का सुख नहीं है। इसलिए मैं यह खेती बाड़ी नहीं करना चाहता। मैं बुद्ध के पास चला जाऊँगा।" महानम ने कहा।

"भैया, मैं खेती बाड़ी के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मुझे बुद्ध के पास जाने दो। तुम खेती बाड़ी देखो।" अनुरुद्ध ने भाई से विनती की। महानम यह ही चाहता था।

अनुरुद्ध ने अपनी माँ के पास जाकर कहा—"माँ, मैं बुद्ध के पास चला जाऊँगा। तुम अपनी अनुमति दो।"

"तुम्हारे पिता तो गुजर गये तुम दोनों मेरे लिए दो आँखों के समान हो। तुम में से अगर एक भी गया तो मैं अन्धी हो जाऊँगी।" माता ने कहा।

अनुरुद्ध ने बार बार उनकी अनुमति माँगी। माता ने सोचा कि अनुमति यदि

सर्वथा न दी गई तो लड़के के मन को धक्का पहुँचेगा। "बेटा, जब तुम बार-बार जाने के लिए कह रहे हो तो मैं भी क्या कह सकती हूँ! भद्री अगर बुद्ध का शिष्य होना चाहे तो तुम भी जाना" माँ ने कहा। भद्री तब ही राज्य-कार्य देखने लगा था, वैसा लड़का कभी सन्यास न लेगा, यह अनुरुद्ध की माँ का विचार था।

अनुरुद्ध ने भद्री को सूझबूझ से मनाने का निश्चय किया। शाक्य वचन देकर मुकरते नहीं थे। अगर किसी तरह भद्री को सन्यास के लिए मना लिया गया तो उसके

बाद वह प्राण दे देगा, पर वचन देकर न मुकरेगा।

अनुरुद्ध भद्री के पास गया। उसका आलिंगन करके उससे कहा—"मैं तुम्हें इतना प्यार कर रहा हूँ, अगर कभी मैंने सन्यास ले लिया, तो मेरे साथ रहने के लिए तुम सन्यास ले लोगे?"

भद्री को स्वप्न में भी न सूझा था कि अनुरुद्ध ने सन्यास ग्रहण करने का निश्चय कर लिया था। उसने यूँही कह दिया "अगर तुमने सन्यास लिया तो मैं भी सन्यासी हो जाऊँगा।" उसने कहा।

अनुरुद्ध फूला न समाया। उसने कहा—"मैं अभी सन्यासी होने जा रहा हूँ। तू भी मेरे साथ आ।"

भद्री चकित रह गया। "अरे, अभी हम लड़के हैं। बहुत से भोग विलास हैं, जिनका हमें भोग करना है। सन्यासी होने की क्या जल्दी है? बुढ़ापा आने पर सन्यास ले लेंगे।" उसने कहा।

"क्या कहीं लिखा है कि बुढ़ापा के बाद ही मौत आती है। क्या सब बूढ़े होकर ही मर रहे हैं? सन्यास को बुढ़ापे के साथ जोड़ना ठीक नहीं है। सिद्धार्थ ने उनतीस वर्ष की उम्र में ही सन्यास ले लिया था। हमारे देश में कितने ही क्षत्रियों ने यौवन में सन्यास ले लिया था। इसलिए तुम भी मेरे साथ चले आओ।" अनुरुद्ध ने कहा।

"तो फिर मुझे सात साल का समय दो। तब सन्यास ले लेंगे।" भद्री ने कहा। लेकिन अनुरुद्ध न माना। परन्तु जब भद्री समय के लिए भाव-ताव करने लगा तो उसने उसको सात दिन का समय दिया। (अभी है)

# मणि - माणिक्य

अनादि काल से रत्न मनुष्यों को आनन्द देते आये हैं। इसके कई कारण हैं क्योंकि ये मुश्किल से मिलते हैं। चमकाये जाने पर उनके अनेक रंग निखर आते हैं। ये बहुमूल्य हैं। एक दो रत्न पाकर परम दरिद्र भी देखते देखते रईस हो सकता है।

रत्न अब सम्पत्ति के चिन्ह हैं। ये राजाओं के मुकुटों को, रानियों के आभूषणों को अलंकृत करते हैं। रत्न राशि अपार सम्पत्ति की परिचायक है।

रत्नों का राजा हीरा है। सृष्टि में इससे बढ़कर कड़ी चीज़ कोई नहीं है। परन्तु इसमें है कोयला ही। पेन्सिल के सिक्के में और हीरे की सामग्री में रसायन की दृष्टि से कोई भेद नहीं है।

वही वस्तु, स्फटिक रूप में हीरा कहलाती है। यही बहुमूल्य हो राजाओं के किरीट में, अंगूठियों में, आभरणों में, अमीर स्त्रियों की बालियों में व दूसरे गहनों में स्थान पाती है।

प्रथमावस्था में हीरे पत्थर की तरह ही होते हैं। जब उनको कारीगर चमकाते हैं तब उनमें सौन्दर्य, आकर्षण आता है।

अब तक पाये गये हीरों में सब से बड़ा कुलिनान है। इसका भार २१०६ केरट है। (एक केरट करीब करीब एक तोले का साठवाँ भाग है) इस हीरे को जब ब्रिटेन सम्राट एडवर्ड सप्तम को दिखलाया गया तो बताया जाता है कि उसने कहा—"अगर मुझे यह कहीं सड़क पर दिखाई देता तो इसे शीशा समझकर मैं एक

तरफ हटा देता। इस पर ध्यान न देता।" अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हीरे "ग्रान्ड मोगल" "कोहिनूर" "मून आफ दि मौउन्टैन्स" कभी हमारे देश में ही थे।

संसार में अन्यत्र हीरों की खानों का पता लगाने के लिए तरह तरह की घटनाओं से सहायता मिली। यहाँ हम दो उदाहरण लें। १७२७, में ईसाई धर्म के एक प्रचारक ने ब्राज़ील में उस मिट्टी में जो धोने के लिए धोई जा रही थी, हीरे देखकर उन्हें पहिचान लिया, क्योंकि उसने भारत में पहिले ही प्रथमावस्था के हीरे देख रखे थे। वह हीरों के बारे में जानता था। इस आकस्मिक घटना के कारण वहाँ हीरों का उद्योग विस्तृत रूप से शुरू हो गया।

इसी तरह दक्षिण अफ्रीका में किम्बर्ले नामक स्थल पर, १८८६ में, बोअर जाति के एक किसान लड़के को एक चमकीला—"पत्थर-सा" दिखाई दिया। वह पत्थर क्या मिला कि वहाँ एक हीरों की खान ही मिल गई।

इस समय और जगहों की बनिस्पत बेल्जियम कान्गो में अधिक हीरे निकाले जा रहे हैं। प्रति वर्ष तीन टन हीरे कुल मिलाकर संसार में खोदे जाते हैं। परन्तु इनमें दो फीसदी ही चमकाकर आभूषणों के लिए उपयोग किये जाते हैं। बाकी सब यन्त्र, उपकरणों के निर्माण में प्रयुक्त होते हैं। चमकाये हुए हीरों में भी सर्वथा शुद्ध हीरे बहुत कम ही प्रायः मिलते हैं। हीरों में श्रेष्ठ हीरों का कोई रंग नहीं होता। नीरंग

किम्बर्ले हीरों की खान

हीरों की कीमत ही अधिक होती है। परन्तु हीरों में ऐसे हीरे भी हैं, जिनका रंग बहुत सुन्दर होता है। उनमें कई बहुत प्रसिद्ध हैं।

१६३८ में एक फ्रेन्च भूगोल शास्त्र विशेषज्ञ भारत आया और यहाँ से कुछ हीरे ले गया। उसने १६६८ में फ्रान्स के राजा, लूई चौदहवें को एक बड़ा नीला हीरा, और चौबीस अन्य छोटे मोटे हीरे बेचे। उस नीले रंग के हीरे को फिर चमकाया गया, और उसको राजवंश के हीरों में शामिल कर लिया गया।

१७९२ में इनको किसी ने चुरा लिया, और हीरे तो मिल गये पर वह नीला हीरा न मिला। वह होते होते, होप नाम के एक व्यक्ति के पास आया, तब तक उसका आकार बहुत कम हो चुका था। अब इस होप हीरे का भार ४४,१/२ केरट है।

होप हीरे की अपेक्षा अधिक सुन्दर, अधिक कीमती, ड्रिस्टेन हीरा है। यह हरे पत्ते के रंग का है। टीफनी एक और प्रसिद्ध हीरा है। इसका रंग संतरे के रंग का-सा है। अभी हाल में, एलिज़ाबेथ रानी को गुलाबी रंग का हीरा उपहार में दिया गया था।

कोहिनूर हीरा संसार में प्रसिद्ध है। ३०००, वर्ष पहिले यह गोदावरी नदी में मिला था। यह कभी राजा विक्रमादित्य के पास था, कालक्रम से यह अलाउद्दीन के पास आया।

१५२६ में बाबर ने लिखा कि इसकी कीमत संसार में होनेवाले एक दिन के खर्च में आधी थी।

हीरा प्रथमावस्था में, चमकाने पर

१७३९ तक यह हमारे देश पर राज्य करनेवाले मुगलों के हाथ में ही रहा।

उस साल नादिरशाह ने दिल्ली पर हमला किया। मुगलों को हराकर उसने दिल्ली लूटी। कई हीरे उसे मिले, पर यह हीरा न मिला। उसने देखा कि पराजित मोहम्मद शा ने उसको अपनी पगड़ी में छुपा रखा था।

नादिरशाह ने कहा—"आओ, हम अपनी पगड़ियाँ बदल लें।" क्योंकि समझौता होने पर यह किया जाता था, इसलिए मोहम्मद शा को यह मानना पड़ा। इस तरह यह हीरा नादिरशाह के हाथ चला गया। छुपे छुपे नादिरशाह ने उसे पगड़ी में से निकालकर देखा। वह आनन्द से चिल्लाया "कोहिनूर" इसका मतलब कान्ति पुंज है। तब से इस हीरे का नाम यही पड़ गया। और इसी नाम से यह मशहूर हुआ।

इसके बाद यह हीरे कई के हाथों में गया। आखिर यह ईस्ट इण्डिया कम्पनीवालों के हाथ लगा। उन्होंने ब्रिटिश महारानी विक्टोरिया को इसे भेंट में दे दिया। अब भी यह ब्रिटिश राजवंश के पास है।

केम्प और नीलम एक ही परिवार के खनिज हैं। स्फटिक अगर लाल हों, तो उन्हें केम्प कहा जाता है, अगर वे बिना किसी रंग के हों, या गुलाबी, पीले, हरे, या जेमिनी रंग के हों तो उनको नीलम कहते हैं।

इनको अगर एक ओर मोड़कर देखा जाय तो एक रंग दिखाई देता है, और दूसरी ओर मोड़कर देखा जाय तो एक और रंग दिखाई देता है। इसलिए उनको चमकाने के समय इस बात का ख्याल करना पड़ता है।

कभी कभी केम्पों और नीलम को इस तरह रखा जाता है, कि षट कोणों में से कान्ति निकलती है।

केम्प नक्षत्र, नीलम नक्षत्र

इन भागों को अलग करने पर उनको "नक्षत्र" कहा जाता है। इस तरह केम्प नक्षत्र और नीलम के नक्षत्र पैदा किये जाते हैं। ये देखने में बहुत सुन्दर और आकर्षक होते हैं। १२ किरणोंवाला एक आश्चर्यजनक केम्प हाल में अमेरिका में दिखाया गया था।

प्रायः १० केरट भारवाला केम्प बड़ा समझा जाता है। २५ केरट से अधिक भारवाले केम्पों का मिलना कठिन है। परन्तु नीलम के बारे में ऐसी बात नहीं। कहीं कहीं तो १०० केरट से भी भारी मिले हैं।

लंका में एक ऐसा नीलम भी मिला, जिसका भार दो पाउन्ड था। केम्प व नीलम पहिले बर्मा से आया करते थे। परन्तु बर्मा में नीलम की अपेक्षा केम्प अच्छे मिलते हैं। सियाम में केम्प की अपेक्षा नीलम अधिक अच्छे मिलते हैं। लंका में अच्छे नीलम मिलते हैं।

कई ऐसे केम्प हैं, जो वस्तुतः केम्प नहीं हैं, कोई और खनिज हैं, पर वे प्रचलन में रहते हैं। इस तरह के केम्पों में कई प्रसिद्ध भी हैं। इनमें से दो ब्रिटिश मुकुट में, और राजवंश के रत्नों में भी हैं। उनमें से एक ३५२ केरट का है, जो कभी रणजीत सिंह, जहाँगीर, शाहजहाँ, औरन्गजेब, मोहम्मद शा के पास था।

नीलम में कई बहुत बड़े हैं। बर्मा राजा के पास ९५१ केरट के, रूस के राजा के पास २६० केरट की नीलम थे। प्रसिद्ध "स्टार आफ इन्डिया" का भार ५६३ है। केम्प नक्षत्रों में प्रसिद्ध "डि लोन्ग" है। ये दोनों इस समय अमेरिका में हैं।

ब्रिटिश राजमुकुट में असली और नकली केम्प

कैम्प, और नीलम पत्थरों में मिलते हैं। परन्तु खानों में से निकाले गये पत्थरों के चुनने में बहुत समय लगता है, बहुत मेहनत लगती है। यह असान काम नहीं है।

स्वाभाविक रत्नों के साथ नकली रत्न भी हैं। इस समय जो असली रत्न नहीं खरीद पाते, वे नकली रत्नों से ही तसल्ली कर लेते हैं। पिछले कुछ सालों से ही कृत्रिम रत्न तैयार होने लगे हैं। इन कृत्रिम रत्नों में कैम्प और नीलम भी हैं। ये तीन चौथाई असली कैम्प और नीलम की तरह ही होते हैं। परखने पर उनके दोष मालूम होते हैं। परन्तु ये बहुत सस्ते मिल जाते हैं। देखने में असली जितने ही सुन्दर मालूम होते हैं। आश्चर्य तो यह है कि अब कैम्प और नीलम के मशग्रों को भी कृत्रिम रूप से बनाया जा रहा है, जो नैसर्गिक वस्तुओं का मुकाबला करती हैं।

पन्ना मरकत, मणि प्रसिद्ध हैं। ये चमकीले हरे रंग के होते हैं। इनमें खनिज, बैरिलियम आदि हैं, जब इसमें क्रोमियम मिलता है, तो इसमें हरा रंग पैदा होता है। नहीं तो इसका रंग कुछ नीला, हरा-सा होता है समुद्र के रंग की तरह। इनमें गुलाबी रंग और पीले रंग के भी होते हैं। इनमें वे भी हैं, जिनमें यूरेनियम मिला होता है। उनको " हिली मांडार " कहा जाता है।

एक जमाना था, जब मरकत मिश्र और लाल समुद्र के तट से आया करते थे। अमेरिका में श्वेत जातियों के जाने से पहिले ही वहाँ के रेड इन्डियन मरकतों से परिचित थे। स्पेनियार्डों ने वहाँ मरकतों की खान खोजी, और वहाँ से उन्हें निकालकर, वे स्पेन भेजने लगे, वहाँ से ये भारत लाये जाते। और जगह भी भेजे जाते। उनका व्यापार होता। इनमें से एक को मढ़कर एक मर्तबान तैयार

मरकत से बनाया गया पात्र

किया गया। एक स्फटिक से तैयार किये इस मर्तबान का भार कहा जाता है। २,६८० केरट है। यानि, डेढ़ पाउन्ड के करीब।

इसी मरकत मणि से बना एक पान पात्र जहाँगीर के पास था। एक दिन उसकी पत्नी, नूरजहाँ ने अपने पति और कुछ व्यक्तियों को सोने के पात्र में शराब पीते देखा। "और की तरह तुम भी क्यों सोने के पात्र में पीते हो?" वह पति पर बो नाराज़ हुई।

फिर उसने उसे मरकत का बना पात्र भेंट में दिया। पहिले तो जहाँगीर खुश हुआ, फिर जल्दी ही जान गया कि उस पात्र में अधिक शराब न आती थी। परन्तु चूँकि सिवाय उस पात्र के किसी और पात्र से न पीने का वचन वह पत्नी को दे चुका था, इसलिए वह कुछ न कर सका। यह पात्र इस समय अमेरिका में है। और संसार के बहुमूल्य वस्तुओं में माना जाता है। इसकी गणना होती है। बिना हरे रंग के या समुद्र के रंगवाले निष्कलंक पन्नों यदि बड़े हों, तो उनकी कीमत भी बहुत होती है। उनके बड़े बड़े स्फटिक मिलते हैं।

१९१० में ब्राज़ील में २२० पाउन्ड का निष्कलंक स्फटिक मिला। इससे बड़ा कभी किसी को कहीं न मिला था। इसे काटने के लिए जर्मनी भेजा गया। इसमें से दो लाख केरट के पन्ने तैयार किये गये।

यह भी पता लगाया गया कि यदि हरे या नीले रंग मिले पन्नों को होशियारी से गरम किया गया तो वे सुन्दर नीले रंग के हो जाते हैं।

मोती, मूँगे आदि को हम नवरत्नों में गिनते हैं। परन्तु बाकी रत्नों की तरह ये खनिज नहीं हैं। पाश्चात्य लोग इसको तो नवरत्नों में शामिल नहीं करते, परन्तु मोतियों को करते हैं।

अच्छे मोती, अच्छे सीपों से निकलते हैं।
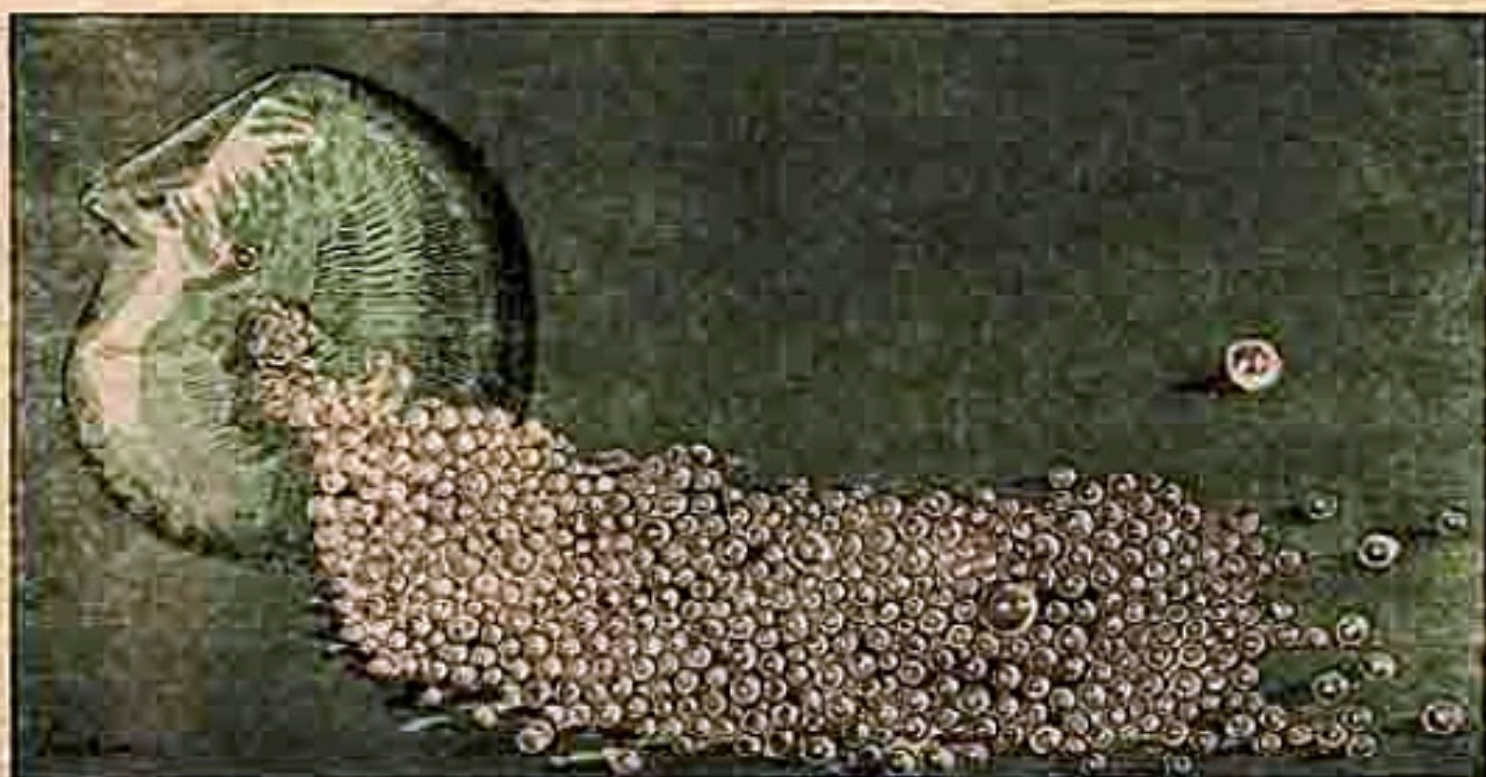
कुछ समुद्री प्राणियों के शरीरों में जब और प्राणी आ मिलते हैं तो उनके चारों ओर एक प्रकार के वस्तु के जम जाने से मोती पैदा होते हैं। इस तरह सीप, शंख आदि कई जन्तुओं में मोती मिलते हैं।

हिन्द महा समुद्र में कद्दू के बराबर मोती भी मिलते हैं। पर इन मोतियों की खास कीमत नहीं है। असली मोतियों के सीपों में मिलनेवाले मोतियों का ही मूल्य है।

मोती का सीप भी मोती की तरह चम-चमाता है। चाहे, मोती किसी भी कीड़े का हो पर वे सब साधारणतया उसके कड़े चर्म-से सम्बधित वस्तु से ही बनते हैं।

अच्छे मोतीवाले कीड़े हिन्द समुद्र और पेसिफिक समुद्र में हैं। अमेरिका की नदियों में भी कई ऐसे कीड़े हैं, जो अच्छे मोती पैदा करते हैं। १९२० से, जापान के लोग मोतियों की फसल पैदा कर रहे हैं। १९४० में उनका यह उद्योग इतना बढ़ा कि वे प्रति वर्ष करोड़ मोती पैदा करने लगे। ये मोती ही बहुमूल्य हैं। बड़े-बड़े दाम पर बिकते हैं। असली मोतियों का तो कहना ही क्या?

हम में से कई अंगूठियों में "ओपेल" पत्थर लगवाते हैं। ओपेल स्फटिक रूप में नहीं होता। वह पत्थरों में शामिल है। क्योंकि उसमें से अनेक रंग की किरणें निकलती हैं, इसलिए देखने में अच्छे मालूम होते हैं।

हंगरी में मिलनेवाले ओपेल सफेद रंग होते हैं, और उनमें से लाल, नीली, हरे रंग की किरणें निकलती हैं।

संसार का सबसे बड़ा बिना कटा हीरा (२२० पाउन्ड भार)

आस्ट्रेलिया के न्यू साउथ वेल्स में मिलनेवाले कोयले के रंग में या काले रंग में होते हैं। उनको इधर उधर घुमाया जाय तो उनमें अनेक रंग की किरणें नृत्य करती सी मालूम होती हैं। ये भी कई आभरणों में उपयुक्त होते हैं।

आस्ट्रेलिया में ओपेल पत्थरों की एक और विशेषता है। ये वहाँ के प्राचीन नष्ट जन्तुओं के ऊपर शिला के रूप में बढ़ते हैं। पत्थर के अन्दर रंग बिरंगी लकीरें साफ-साफ दिखाई देती हैं।

अमेरिका के नेवडा प्रान्त में जहाँ जंगल पथरा गये हैं, ओपेल मिलता है।

"आल्यूमिनं फ्लूओसिलिकेट" नाम का खनिज पुखराज में होता है। परन्तु सस्ते, हरे रंग के स्फटिकों को पुखराज के नाम से प्राय: बेचा जाता है।

पुखराज साधारणतया पीले रंग में होता है। परन्तु बिना रंग के पुखराज और नीले रंग के पुखराज अलग अलग भी मिलते हैं। गुलाबी रंग के पुखराज बहुत कम मिलते हैं। परन्तु गरम करने पर इन पर यह रंग आ जाता है।

हल्के नीले रंग को पुखराजों को नीलम कहकर प्राय: बाजार में बेचा जाता है। ये पत्थों की खानों में ही मिलते हैं।

प्राचीन काल में यह विश्वास किया जाता था कि पुखराज पहिननेवाले को गुस्सा नहीं आता है। वह गरम पानी को ठंडा कर देता है। पागलपन और दमे को ठीक कर देता है, बल देता है, आकस्मिक मृत्यु से बचाता है, आदि आदि। अब भी कई जगह ये विश्वास सम्भवत: प्रचलित हैं। क्रिसोबेरिल नामक खनिज से वैडूर्य-रत्न मिलता

बिना कटे रत्नों का काटना कारीगरों का काम है।

है। इनमें दो तरह के प्रसिद्ध हैं। एक को "बिल्ली की आँख" और दूसरे को "अलेक्जेन्ड्रेट" कहा जाता है।

"बिल्ली की आँख" नाम के अनुरूप है। इसका रंग शहद के रंग की तरह, पीला, हरा, मिश्रित होता है।

"अलक्जेन्ड्रेट" दिन में हरा और दीये की रोशनी में लाल दिखाई देता है।

"जेड" एक प्रकार का पत्थर है। यह बहुत सख्त होता है, और आसानी से चमकाया जा सकता है।

दो तरह के पत्थरों को रसायन की दृष्टि से यह नाम मिला हुआ है। इसी पत्थर का उपयोग चीन, और मध्य अमेरिका में अनादि काल से होता आया है।

मरकत रंग में जो "जेड" होता है, वह बहुत मशहूर है। यह बहुमूल्य भी है। जेड से बनाई गई मालाएँ चार पाँच लाख रुपयों में बिकीं। पिछली शताब्दी से यह मुख्य तौर पर बर्मा में ही खोदा जा रहा है।

कई ऐसे खनिज हैं, जो सस्ते रत्नों के रूप में प्रचलित हैं। उनमें से कई हीरों से भी अधिक चमकते हैं। परन्तु वे हीरे की तरह कठोर नहीं होते।

अन्य देशों में अम्बर नहीं तो "तृणमणि" भी एक रत्न कहलाया जाता है। यह खनिज नहीं है। यह शहद के रंग का है। इसमें से प्रकाश की किरणें जा सकती हैं। हम इससे इच्छानुसार चाहे जो कुछ बना सकते हैं।

जेड से बनाई गई चीज़ें

# चटपटी बातें

एक वृद्ध ने अपने एक मित्र से कहा कि उसका पैर दुख रहा था।

"कोई बात नहीं, उम्र के साथ ऐसी बीमारियाँ आती ही हैं।

"वाह! दूसरे पैर की भी तो उतनी ही उम्र है। फिर वह क्यों नहीं दुखता!" वृद्ध ने पूछा।

* * *

अमेरिका के प्रसिद्ध हास्य लेखक मार्क ट्वेन ने छुटपन में मिसूरी के एक पत्रिका में काम किया था। एक दिन उस पत्रिका के एक ग्राहक ने लिखा—"मुझे आज आपकी पत्रिका में मकड़ी दिखाई दी है। क्या शकुन होगा!" उसका उत्तर देते हुए मार्क ट्वेन ने लिखा—"इस में शकुन कुछ नहीं है। मकड़ी यह देख रही है कि हमारी पत्रिका में कौन विज्ञापन नहीं दे रहा है! उसका इरादा उनकी दुकानों में जाकर जाल बुनने का है।"

* * *

अखबार खबरें देने में होड़ करते हैं। अगर कभी कोई ऐसी खबर देता है, जो और दे नहीं पाते हैं तो वे इस पर गर्व भी प्रदर्शित करते हैं। एक बार एक अखबार ने यों कहा:—

"फलाने गाँव में ४०० घर जल गये हैं। यह खबर इसी अखबार ने ही कल प्रकाशित की थी। यह खबर बिल्कुल झूटी है, यह औरों की अपेक्षा पहिले प्रकाशित करते हुए हम गर्व का अनुभव करते हैं।

* * *

श्याम: जब मैं दिल्ली आया तो जानते हो कैसे अच्छे कपड़े पहिनकर आया था!

राम: मैं कमीज़ पायजामा तो अलग, आखिर चप्पल पहिनकर भी न आया।

श्याम: अरे कोई हंसा नहीं!

राम: क्यों भला! मैं सीधे माँ के पेट से जो आया था। मैं यहीं पैदा हुआ हूँ।

# दीपों का त्यौहार

[ कविता देवी ]

चल-चल आज मनायें हम सब
दीपों का त्यौहार रे !

आसमान में तारे जितने
उतने दीप जलाये रे,
धरती के दीपों को लखकर
नभ के दीप जलाये रे !

काली रात किरण की साड़ी
पहन उठे मुस्काय रे,
पाये जिसको देख अगर तो
पूनम भी शरमाय रे !

घर-घर दीप जलेंगे जिस क्षण
भागेगा अंधकार रे !
चल-चल आज मनायें हम सब
दीपों का त्यौहार रे !!

खूब पटाके छोड़ें हम औ'
फुलझड़ियाँ भी आज रे,
रँग-बिरँगी आतिशबाजी
छोड़ें नभ में आज रे !

झगड़ा क्यों अब रहे किसी से
सब मिल खेलें खेल रे,
वैर भाव सब भूलें हम औ'
बढ़े परस्पर मेल रे !

उछलें-कूदें, नाचें-गायें
खुशियों का त्यौहार रे !
चल-चल आज मनायें हम सब
दीपों का त्यौहार रे !!

## ६. सेन्ट्रल फूड टेक्नोलोजिकल इन्स्टिट्यूट — मैसूर

यह संस्था चेलवाम्बा महल में है। चूंकि यह ऊंची जगह पर है इसलिए यहां से सारा मैसूर दिखाई देता है। इस महल के चारों ओर बड़े-बड़े औद्योगिक क्षेत्र व बाग बगीचे हैं।

हमारे देश की मुख्य समस्याओं में खाद्य पदार्थों की समस्या अत्यन्त मुख्य है। इसलिए इस संस्था का कार्य विशेष महत्व रखता है। यहां खाद्य पदार्थों की रक्षा, उनके गुणों में वृद्धि, नये-नये खाद्य पदार्थों का निर्माण, बच्चों और रोगियों के लिए पौष्टिक पदार्थों का निर्माण, आदियों पर शोध किया जाता है। टेपियोका से चावल, मूंग फली से एक प्रकार का दूध, दही लस्सी आदि इस संस्था में बनाये गये हैं।

# मेरी बहना

[ 'शशि' ]

छोटी-सी है मँजुकुमारी
मेरी है वह बहना प्यारी,
'नन्दू' 'पक्कू' उसे रिझाते
'ज्ञान' 'प्रेम' औ' 'धरम' खिलाते।

बापू से वह कभी न डरती,
अम्मा के संग फिलका करती
कभी न रोती, हँसती रहती
अपनी धुन में गाती रहती।
खेल-कूदकर खिलते-बढ़ते
बड़ी बनेगी लिखते-पढ़ते,
तभी एक दिन द्वार बहन के
मद्रासी-सा ही बन-ठन के
जाऊँगा तो खड़ी रहेगी
मुझे देखकर नहीं हिलेगी,
सोचेगी — परदेसी आया
अपनी किसी गरज से आया;
फिर कह देगी—'नहीं यहाँ हैं
बापू जानें गये कहाँ हैं।
नहीं हमें कुछ गये बताकर
कल फिर आयें सुबह कृपाकर!'

किंतु कहूँगा धीरे से मैं—
'सुनो जरा जो कहता हूँ मैं,
होगी कहीं यहीं पर बहना
भैया तुम्हें बुलाता, कहना।'
तभी कहीं से 'धरम' आयेंगे,
और कहीं से 'करम' आयेंगे,
'ज्ञान' 'प्रेम' भी गुनगुन करते
'नन्दू' 'पक्कू' जरा हिचकते।
सभी करेंगे मुझे नमस्ते
देखूँगा मैं उनको हँसते
फिर पूछूँगा—'मंजु कहाँ है?'
'धरम' कहेगा—'खड़ी यहाँ है!'
सुन यह मैं हैरान रहूँगा
मुँह से लेकिन कुछ न कहूँगा,
खड़ी रहेगी यह शरमायी
जब मैं दूँगा उसे मिठाई!

## फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जनवरी १९६० :: पारितोषिक १०)

### कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७, नवम्बर '५९ के अन्दर भेजनी चाहिये।

**फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता**
**चन्दामामा प्रकाशन**
वडपलनी :: मद्रास - २६

---

### नवम्बर – प्रतियोगिता – फल

नवम्बर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनकी प्रेषिका को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **दिल्लगी नाक से!**

दूसरा फ़ोटो : **जिन्दगी मस्ती से!!**

प्रेषिका : **मंजुकुमारी**

C/O. सुरेन्द्र सिंह, ९२, सिमेट्री रोड, दानापुर, पटना (बिहार)

# चित्र - कथा

एक दिन दास और वास स्कूल के बाद बाग में खेलने गये। वे अपनी किताबें और गेंद एक पेड़ के नीचे रखकर खेलने लगे। इतने में एक शरारती लड़का उन्हे चुराकर एक टीले के पीछे छुप गया। दास और वास ने आकर देखा कि किताबें वगैरह नहीं हैं। वे उन्हे खोजने लगे। इस बीच "टायगर" ने टीले पर से एक खाली डब्बा लुढ़काया। लुढ़कते डब्बे ने शोर किया और शोर सुनकर शरारती लड़का चम्पत हो गया।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3 Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

एजंटस् :

**एजंटस् एण्ड डिस्ट्रिब्युटर्स प्रायवेट लिमिटेड**

**१२०, अर्मिनियन स्ट्रीट, मद्रास - १**

# नहान

## अब नये और बड़े साइज़ में

**नहान**

कीटाणु-नाशक साबुन
आपको साफ़ और स्वस्थ
रखता है।

यह टाटा उत्पादन है — अवश्य ही उम्दा है।

हम प्रत्येक व्यक्ति और व्यापारिक संस्था को आश्वासन देना चाहते हैं कि कलात्मक सृजन, स्पष्टतम कार्य-निपुणता, आकर्षक मुद्रण और शीघ्र वितरण हमारा ध्येय है।
★
हिन्दी, अंग्रेजी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मराठी, गुजराती, मलयालम और उड़िया में छपाई का कार्य लिया जाता है।
★
दि बी. एन. के. प्रेस
(प्राइवेट) लिमिटेड
चन्दामामा बिल्डिंग्स :: मद्रास-२६
टेलिफ़ोन :
८८८५१-४ लाइन्स